माघ कृष्ण - 3 ■ संवत 2080 ■ वर्ष - 11 ■ अंक - 182 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » रविवार » 28-01-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 अब पराली और गोबर बनेगा किसानों की अतिरिक्त आय का जरिया : योगी

6 मेजर भूपेंद्र सिंहः खुद की जान बचाने के लिए नहीं किया कोई समझौता

7 कुछ लोग अपने ही गठबंधन में न्याय नहीं कर पा रहे : अनुराग ठाकुर

फर्स्ट टेक

ईरान में पाकिस्तान से सटी सीमा के पास बंदूकधारियों ने नौ लोगों की हत्या कर दी

तेहरान/एपी। पाकिस्तान से सटे ईरान के दक्षिण-पूर्व इलाके में अज्ञात बंदूकधारियों ने शनिवार को नौ लोगों की हत्या कर दी। मीडिया की खबरों से यह जानकारी मिली। अर्ध सरकारी समाचार एजेंसी 'मेहर' की एक खबर में कहा गया है कि गोलीबारी ईरान के सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत में सारावन शहर के पास एक घर में हुई। इसमें कहा गया कि पीड़ित ईरानी नहीं थे। किसी भी आधिकारिक मीडिया संस्थान ने अपने समाचार में गोलीबारी की सूचना नहीं दी है और किसी भी समूह ने अभी तक हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डे को मिला उत्कृष्टता पुरस्कार

तिरुवनंतपुरम/भाषा। तिरुवनंतपुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया है। शनिवार को एक बयान में कहा गया कि 'तिरुवनंतपुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे' को हवाई अड्डे के संचालन के लिए की गई निरंतर सुधार पहल के आधार पर चुना गया था। पुरस्कार समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय सड़क और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने की। महाराष्ट्र के नागपुर में गुणवत्ता अवधारणाओं पर राष्ट्रीय सम्मेलन 2024 में 'क्वालिटी सर्कल फोरम ऑफ इंडिया' ने इस प्रतिष्ठित उत्कृष्टता पुरस्कार के लिए चुना है।

पाकिस्तान ने चीन से फिर मांगा दो अरब डॉलर का कर्ज

इस्लामाबाद/भाषा। नकदी संकट से जूझ रहे पाकिस्तान ने अपने करीबी सहयोगी चीन से एक साल के लिए दो अरब डॉलर का कर्ज मांगा है। शनिवार को एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवारुल हक काकड़ ने चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि 23 मार्च को चीन से ऋण जमा करने का समय पूरा होते ही ऋण को वापस कर दिया जाए। समाचार पत्र द एक्सप्रेस ट्रिब्यून के अनुसार, काकड़ ने पत्र में आर्थिक संकट के दौरान पाकिस्तान को वित्तीय सहायता देने के लिए चीन के प्रति आभार व्यक्त किया।

28-01-2024 सूर्यास्त 6:07 बजे | 29-01-2024 सूर्योदय 6:35 बजे

BSE	NSE
70,700.67	21,352.60
(-359.64)	(-101.35)

सोना	चांदी
6,488 रु.	77,200 रु.
(24 कैरेट) प्रति ग्राम	प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

बेमेल गठबंधन

जब भी होता है गठबंधन,
जुड़ते उसमें अवसरवादी।
दोषारोपण इक दूजे पर,
करने वाले हैं बकवादी।
हैं सभी सियासत की चालें,
वादी ना कोई प्रतिवादी।
जैसे मजबूरी में कोई,
करता है अनचाही शादी।।

देश के युवाओं के सपने पूरे करेगा विकसित भारत : मोदी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/एजेन्सी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि विकसित भारत देश के युवाओं के सपनों को पूरा करेगा।

मोदी ने शनिवार को यहां करियप्पा परेड ग्राउंड में वार्षिक राष्ट्रीय कैडेट कोर रैली को संबोधित करते हुए युवाओं के लिए सरकार के दृष्टिकोण को रेखांकित किया, और अगले 25 वर्षों में देश के भविष्य को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। प्रधान मंत्री ने घोषणा की, यह परिवर्तनकारी युग, आने वाले 25 वर्ष, न केवल एक विकसित भारत के निर्माण का गवाह बनेंगे, बल्कि मुख्य रूप से युवाओं को लाभ पहुंचाएंगे, मोदी को नहीं। इस युग के सबसे बड़े लाभार्थी आप जैसे युवा व्यक्ति हैं।

मोदी ने इस मौके पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम देखा और सर्वश्रेष्ठ कैडेट पुरस्कार प्रदान किये। प्रधान मंत्री ने कहा कि एनसीसी रैली एक दुनिया, एक परिवार, एक भविष्य की भावना को मजबूत कर रही है। उन्होंने कहा कि 2014 में इस रैली में 10 देशों के कैडेट थे आज यह संख्या 24 हो गई है।

प्रधानमंत्री ने कहा, एनसीसी कैडेटों के बीच उपस्थित होना एक भारत, श्रेष्ठ भारत के विचार को उजागर करता है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि एनसीसी का दायरा लगातार बढ़ रहा है और आज का अवसर एक नई शुरुआत का प्रतीक है। उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्रों के गांवों के 400 से अधिक सरपंचों और देश भर के स्वयं सहायता समूहों की 100 से अधिक महिलाओं की उपस्थिति का भी उल्लेख किया, जिन्हें सरकार वाइब्रेंट विलेजेज योजना के तहत विकसित कर रही है।

मोदी ने कहा कि दुनिया आज भारत की बेटियों को हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित करते हुए देख रही है, चाहे वह भूमि, समुद्र, वायु या अंतरिक्ष हो।

नीतीश कुमार के अगले कदम पर है सबकी नजर

आज इस्तीफा दे सकते हैं नीतीश : सूत्र

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पटना/भाषा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रविवार सुबह तक पद से इस्तीफा दे सकते हैं। मुख्यमंत्री के एक करीबी सूत्र ने शनिवार को यह जानकारी दी।

नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर सूत्र ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि नीतीश कुमार के शनिवार देर शाम तक इस्तीफे की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। उन्होंने जोर देकर कहा, वैसे यह (इस्तीफा) निश्चित रूप से रविवार सुबह तक होगा।

सूत्र ने यह भी कहा कि इस्तीफा देने से पहले जनता दल (यूनाइटेड) के अध्यक्ष नीतीश कुमार विधायक दल की एक पारंपरिक बैठक करेंगे।

सूत्र ने कहा कि भाजपा के समर्थन से एक नई सरकार बनने की संभावना के बीच सचिवालय जैसे सरकारी कार्यालयों को रविवार को खुला रखने के लिए कहा गया है।

इस बीच, भाजपा की प्रदेश इकाई के नेताओं ने पार्टी की एक बैठक के दौरान जद(यू) के 'महागठबंधन' से बाहर निकलने की स्थिति में कुमार का समर्थन करने की औपचारिक घोषणा नहीं की।

भाजपा के सूत्रों ने कहा कि शीर्ष नेतृत्व से निर्देश प्राप्त हुए हैं कि कुमार के इस्तीफा देने तक कोई भी औपचारिक घोषणा नहीं की जाए।

'नौकरी के बदले जमीन' मामला में राबड़ी देवी, बेटी मीसा अदालत द्वारा तलब

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली की एक अदालत ने 'नौकरी के बदले जमीन' घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में शनिवार को बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और उनकी बेटी मीसा भारती तथा हेमा यादव सहित अन्य को तलब किया। अदालत ने रेलवे में 'नौकरी के बदले जमीन' से जुड़े धनशोधन मामले में उनके खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के आरोप पत्र पर संज्ञान लेने के बाद इन्हें तलब किया है। विशेष न्यायाधीश विशाल ने आरोपियों को नौ फरवरी को अदालत में पेश होने का निर्देश देते हुए कहा कि मामले में आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त आधार हैं।

निरंकुशता और भाई-भतीजावाद की जगह अब प्रतिभा ने ले ली है : धनखड़

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को कहा कि देश में ''निरंकुशता और भाई-भतीजावाद'' की जगह अब ''प्रतिभा'' ने ले ली है और आज युवाओं के पास अपने लक्ष्य हासिल करने के अधिक अवसर हैं।

यहां राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की स्वयंसेवकों के साथ बातचीत करते हुए धनखड़ ने दावा किया कि अब कानून के समक्ष वास्तव में सभी समान हैं जबकि अतीत में कुछ लोग सोचते थे कि वे इससे ऊपर हैं।

धनखड़ ने कहा कि भ्रष्टाचार और बिचौलियों का पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो गया है और युवाओं के पास अपार अवसर हैं। उन्होंने कहा, भ्रष्टाचार की निरंकुशता को लोकतंत्र की प्रतिभा से बदल दिया गया है।

एनएसएस स्वयंसेवक उस महिला दल का हिस्सा थीं, जिसने शुक्रवार को गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया था।

युवाओं को 2047 तक भारत को एक विकसित देश बनने में मदद करने वाले ''सैनिक'' बताते हुए उपराष्ट्रपति ने उनसे नवोन्वेषी बनने और अनुसंधान तथा उद्यमिता पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया।

भारतीय सेना में पहली सूबेदार बनी प्रीति रजक

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय सेना में पदोन्नत होने के बाद हवलदार प्रीति रजक शनिवार को सूबेदार का पदल हासिल करने वाली पहली महिला बन गई हैं। वह एक चैंपियन ट्रैप शूटर हैं। सूबेदार रजक दिसंबर 2022 में सेना की सैन्य पुलिस कोर में शामिल हुई थी। सेना ने कहा,''भारतीय सेना के साथ-साथ देश की महिलाओं के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण है। आज ट्रैप शूटर हवलदार प्रीति रजक को सूबेदार के पद पर पदोन्नत किया गया।'' उसने कहा, सूबेदार प्रीति रजक अब भारतीय सेना की पहली महिला सूबेदार हैं। उनकी उपलब्धि नारी शक्ति का एक असाधारण प्रदर्शन है। वह शूटिंग में हवलदार के रूप में सेना में नामांकित पहली मेधावी खिलाड़ी थीं। रजक ने चीन के हांगझाउ में आयोजित 19वें एशियाई खेलों के दौरान ट्रैप में महिला टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता था।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने केरल के राज्यपाल को 'जेड प्लस' सुरक्षा दी : राजभवन

तिरुवनंतपुरम/भाषा। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान की सुरक्षा बढ़ाकर 'जेड प्लस' श्रेणी की कर दी है। राजभवन ने शनिवार को यहां यह जानकारी दी।

उनके कार्यालय ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि सीआरपीएफ कर्मियों वाली 'जेड प्लस' सुरक्षा खान और राजभवन को दी गई है।

पोस्ट में कहा गया है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने केरल राजभवन को सूचित किया है कि राज्यपाल और राजभवन की सुरक्षा बढ़ाकर 'जेड प्लस' श्रेणी की कर दी गई है।

केरल के कोल्लम जिले में उस घटनाक्रम के बाद यह कदम उठाया गया है जिसमें राज्यपाल खान केरल में कोल्लम जिले के निलमेल में शनिवार को उनके खिलाफ 'स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया'(एसएफआई) के कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन करने पर अपने वाहन से बाहर निकले और प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सड़क किनारे एक दुकान के सामने बैठ गए।

खान ने मुख्यमंत्री पिनराई विजयन पर ''राज्य में अराजकता को बढ़ावा देने'' का आरोप लगाया।

हूती हमला : अदन की खाड़ी में

ब्रिटेन के तेल टैंकर के मदद के अनुरोध पर नौसेना की टीम तैनात

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय नौसेना ने शनिवार को कहा कि उसके निर्देशित मिसाइल विध्वंसक आईएनएस विशाखापत्तनम ने ब्रिटिश तेल टैंकर एमवी मार्लिन लुआंडा पर अग्निशमन प्रयासों में मदद के लिए एक टीम तैनात की है, जिसके चालक दल के सदस्यों में 22 भारतीय और एक बांग्लादेशी है। विदेशी मीडिया की खबरों के अनुसार, यमन के हूती आतंकवादियों द्वारा मिसाइल हमले के बाद टैंकर में आग लग गई थी। यह अदन की खाड़ी के प्रमुख नौवहन मार्ग में ईरान समर्थित समूह से जुड़ी नवीनतम घटना है।

नौसेना के एक प्रवक्ता ने कहा कि एमवी मार्लिन लुआंडा के अनुरोध पर, आईएनएस विशाखापत्तनम ने संकट में फंसे जहाज पर चालक दल के सदस्यों के अग्निशमन प्रयासों में सहायता के लिए अग्निशमन उपकरणों के साथ अपनी एनबीसीडी टीम को तैनात किया है। भारतीय नौसेना ने कहा, भारतीय नौसेना एमवी (व्यापारिक जहाजों) की सुरक्षा और समुद्र में जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रति दृढ़ और प्रतिबद्ध है। खबरों के अनुसार, ब्रिटिश तेल टैंकर के संचालक ने कहा है कि जहाज के लाल सागर पार करने के बाद अदन की खाड़ी में उस पर एक मिसाइल से हमला किया गया था।

व्यापारिक जहाजों पर हमलों की हालिया घटनाओं के मद्देनजर भारतीय नौसेना ने अरब सागर और अदन की खाड़ी में अग्रिम पंक्ति के विध्वंसक और पोत तैनात करके अपने निगरानी तंत्र को काफी बढ़ा दिया है।

इस महीने की शुरुआत में, भारतीय नौसेना ने 17 जनवरी की रात को अदन की खाड़ी में एमवी जेनको पिकार्डी पर ड्रोन हमले के बाद उसके संकटकालीन कॉल का जवाब दिया था और पांच जनवरी को, इसने लाइबेरिया के ध्वज वाले जहाज एमवी लीला नॉरफोक के उत्तरी अरब सागर में अपहरण के प्रयास को विफल कर दिया था।

भारत को तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए सभी का सहयोग जरूरी : सीतारमण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा कि वित्त वर्ष 2027-28 तक भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रत्येक भागीदार के सहयोग की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इसके लिए भारत की जीडीपी को 5,000 अरब डॉलर के आंकड़े को पार करना होगा।

वित्त मंत्री ने साथ ही जोड़ा कि सीमा शुल्क विभाग की 'फेसलेस मूल्यांकन' और 'एकल खिड़की निपटान' जैसी पहलों को विकसित करने की जरूरत है।

सीतारमण ने 'अंतरराष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस 2024' के अवसर पर एक लिखित संदेश में कहा कि भारत के 'अमृत काल' के दौरान सभी हितधारकों को एक साथ आने और नागरिकों को लाभ पहुंचाने के लिए योगदान करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इस साल अंतरराष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस का ध्येय वाक्य ''परंपरागत और नए साझेदारों को उद्देश्य से जोड़ने वाला सीमा शुल्क'' है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नारे 'सबका साथ - सबका विकास' की गूंज सुनाई देती है।

सीतारमण ने कहा, भारत को 2027-28 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए हर साझेदार को सहयोग करने की जरूरत है।

दुनिया के सबसे बड़े क्रूज जहाज ने मियामी बंदरगाह से अपनी पहली यात्रा शुरू की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मियामी/एपी। दुनिया के सबसे बड़े क्रूज जहाज ने शनिवार को मियामी बंदरगाह से अपनी पहली यात्रा शुरू की।

रॉयल कैरेबियन समूह के क्रूज जहाज 'आइकॉन ऑफ द सीज़' उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के रास्ते अपनी पहली सात दिवसीय द्वीप-यात्रा के लिए दक्षिण फ्लोरिडा से रवाना हुआ है। यह जहाज एक सिरे से दूसरे सिरे तक 1200 फुट (365 मीटर)लंबा है। इस जहाज का दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी लियोनेल मेस्सी की उपस्थिति में मंगलवार को औपचारिक रूप से नामकरण किया गया था।

रॉयल कैरेबियन समूह के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी जेसन लिबर्टी ने हाल में कहा था, ''आइकॉन ऑफ द सीज़ 50 से अधिक वर्षों से देखे गए सपने की परिणति है, जिसका मकसद दुनिया के सर्वश्रेष्ठ छुट्टियों के अनुभव को जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से प्रदान करना है।'' उन्होंने कहा कि इस क्रूज जहाज पर हर आयुवर्ग के लोग यात्रा के दौरान आनंद उठा सकते हैं। कंपनी के अनुसार, जब अक्टूबर 2022 में पहली बार 'आइकॉन ऑफ द सीज़' का अनावरण किया गया था, तो जहाज ने रॉयल कैरेबियन के तत्कालीन 53 साल के इतिहास में एक दिन में सबसे बड़ी संख्या में इसकी यात्रा के लिए बुकिंग दर्ज की थी।

'आइकॉन ऑफ द सीज़' को 20 डेक पर आठ हिस्सों में विभाजित किया गया है। जहाज में छह 'वॉटरस्लाइड', सात स्विमिंग पूल, एक आइस-स्केटिंग रिंक, एक थिएटर और 40 से अधिक रेस्तरां और बार शामिल हैं।

जरांगे ने भूख हड़ताल समाप्त की, शिंदे ने मराठा के लिए ओबीसी लाभ की घोषणा की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। मराठा समुदाय के लोगों के आरक्षण के लिए आंदोलनरत कार्यकर्ता मनोज जरांगे की मांगें महाराष्ट्र सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के बाद उन्होंने शनिवार को अपनी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल समाप्त कर दी और राज्य के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने घोषणा की कि मराठा समुदाय को जब तक आरक्षण नहीं मिल जाता, तब तक उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को दिए जाने वाले सभी लाभ दिए जाएंगे।

जरांगे ने अपनी मांगों को लेकर नवी मुंबई के वाशी में शुक्रवार को अपने हजारों समर्थकों की मौजूदगी में भूख हड़ताल शुरू की थी।

जरांगे (40) ने पिछले शनिवार को हजारों लोगों के साथ महाराष्ट्र के जालना जिले से विरोध मार्च शुरू किया था। उनकी 26 जनवरी से भूख हड़ताल शुरू करने की योजना थी।

जरांगे शुक्रवार सुबह वाशी पहुंचे थे और वह एवं उनके हजारों समर्थक रात भर वहीं रहे। दरअसल, मुंबई पुलिस ने जरांगे को नोटिस जारी कर कहा था कि शहर के किसी मैदान में इतनी बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों के आ सकने की जगह नहीं है।

जरांगे ने शुक्रवार को चेतावनी दी थी कि यदि रात तक उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं तो वह और उनके समर्थक आजाद मैदान में प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन के लिए शनिवार को मुंबई में प्रवेश करेंगे। सरकार ने जरांगे से बातचीत करने के लिए प्रतिनिधिमंडल भेजकर उन्हें मुंबई में नहीं आने के लिए मनाने की कोशिश की थी।

महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार रात जरांगे की विभिन्न मांगों के संबंध में उन्हें एक मसौदा अध्यादेश भेजा था। शिंदे ने मांगों पर चर्चा

करने के लिए अधिकारियों के साथ बैठकें कीं और बाद में जरांगे से मिलने के लिए मसौदा अध्यादेश के साथ एक प्रतिनिधिमंडल भेजा।

महाराष्ट्र सरकार ने शनिवार को अधिसूचना जारी कर मराठा समुदाय के सदस्यों के उन सभी सगे-संबंधियों को कुनबी के रूप में मान्यता दे दी है, जिनके कुनबी जाति से संबंध होने के रिकॉर्ड मिले हैं। कुनबी एक कृषक समुदाय है जो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में आता है और जरांगे मराठा समुदाय के सभी लोगों के लिए कुनबी प्रमाणपत्र जारी किए जाने की मांग कर रहे हैं।

जरांगे ने शनिवार सुबह अपना प्रदर्शन समाप्त करने की घोषणा की और कहा कि महाराष्ट्र सरकार ने उनकी सभी मांगें मान ली हैं। शिंदे पूर्वाह्न करीब पौने 11 बजे धरना स्थल पहुंचे। इसके बाद जरांगे ने मुख्यमंत्री द्वारा जूस पिलाए जाने के बाद अपनी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल समाप्त कर दी।

शिंदे ने इस अवसर पर कहा, मराठा समुदाय को जब तक आरक्षण नहीं मिलता, तब तक उन्हें ओबीसी को मिलने वाले सभी अधिकार और लाभ मिलते रहेंगे। उन्होंने कहा कि कुनबी रिकॉर्ड का पता लगाने के लिए नियुक्त न्यायमूर्ति संदीप शिंदे (सेवानिवृत्त) समिति को विस्तार दिया जाएगा। उन्होंने कहा, समुदाय के सदस्यों से शपथ पत्र एकत्र करने के लिए शिविर लगाए गए हैं और मराठा के बीच कुनबी वंश की पहचान और सत्यापन के लिए तालुका स्तर पर एक समिति भी बनाई गई है।

शिंदे ने कहा, मैं लोगों के हित और उनके कल्याण के लिए फैसले लेता हूं, वोट के लिए नहीं। उन्होंने कहा कि कई शीर्ष नेता मराठा समुदाय से संबंध रखते हैं लेकिन लोगों को वह न्याय नहीं मिल पाया जिसके वे हकदार हैं।

सेज सुधारों पर सरकार कर रही है काम: वाणिज्य सचिव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोलकाता/भाषा। सरकार विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) में सुधारों पर काम कर रही है। वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने शनिवार को कहा कि निर्यात बाजारों में वस्तुओं की प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित किए बिना घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डीटीए) और एसईजेड क्षेत्र के बीच माल की आवाजाही सुचारू रूप से सुनिश्चित करने की कोशिश की जा रही है।

कोविड महामारी के दौरान एसईजेड क्षेत्रों में रहने वालों के बीच घर से काम करने का चलन बढ़ा, जिसके चलते कई कार्यालय स्थान खाली हो गए है।

बर्थवाल ने कहा कि ऐसे में एसईजेड को एसईजेड और डीटीए स्थानों में विभाजित किया गया है। उन्होंने भारत भारत चैंबर ऑफ कॉमर्स के एक कार्यक्रम में कहा, एसईजेड में सुधार जारी हैं ताकि एसईजेड से डीटीए और इसके विपरीत वस्तुओं की आवाजाही प्रभावित न हो। साथ ही उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित न हो। उन्होंने कहा कि सरकार की विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) वैश्विक मूल्य श्रृंखला को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है।

एम्स-भुवनेश्वर ने ड्रोन के जरिये सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तक रक्त पहुंचाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भुवनेश्वर/भाषा। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), भुवनेश्वर ने अस्पताल से खोरधा जिले के एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तक रक्त पहुंचाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी।

बृहस्पतिवार को इस ड्रोन की पहली उड़ान ने 35 मिनट में 60 किलोमीटर की दूरी तय करके एम्स-भुवनेश्वर से खोरधा जिले के टांगी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) तक रक्त की एक थैली पहुंचायी। संस्थान ने एक बयान में दावा किया कि इस उड़ान ने न केवल ओडिशा बल्कि पूरे देश में पहली बार ड्रोन के जरिये रक्त पहुंचाया है। एम्स-भुवनेश्वर के कार्यकारी निदेशक आशुतोष बिस्वास ने कहा, ड्रोन के माध्यम से पहली बार सफलतापूर्वक किसी मरीज को रक्त पहुंचाया गया है। यह पहल हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने में एक महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाती है। एम्स लौटने से पहले सीएचसी से रक्त के नमूने भी एकत्र किए गए। उन्होंने कहा कि ड्रोन सेवा बाढ़ और चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान महत्वपूर्ण चिकित्सा सामग्री की आपूर्ति में मददगार साबित होगी।

केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी अमेठी के दो लाख से अधिक लोगों को प्रभु श्रीराम का दर्शन कराएंगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

अमेठी (उप्र)/भाषा। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री स्मृति ईरानी अपने संसदीय क्षेत्र अमेठी के दो लाख से अधिक लोगों को अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के दर्शन कराएंगी। केंद्रीय मंत्री के प्रतिनिधि ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही तीन लाख से अधिक घरों तक प्रभु श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का प्रसाद पहुंचाने का लक्ष्य सुनिश्चित कर घर-घर प्रसाद पहुंचाने का काम शुरू कर दिया गया है।

मंत्री के प्रतिनिधि विजय गुप्ता कहा, अमेठी की सांसद स्मृति ईरानी के निर्देश पर उत्थान सेवा संस्थान द्वारा अमेठी संसदीय क्षेत्र के तीन लाख परिवारों तक प्रभु श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का प्रसाद पहुंचाने का काम शुरू कर दिया गया है। उन्होंने कहा, फरवरी के प्रथम सप्ताह में संसदीय क्षेत्र के दो लाख से अधिक लोगों को अयोध्या धाम की श्रवण यात्रा पर बस से भेजा जाएगा और सभी को प्रभु श्रीराम के दर्शन कराए जाएंगे।

गुप्ता ने बताया कि पहले 40 हजार से अधिक लोगों को अयोध्या धाम की श्रवण यात्रा करवाने की योजना थी, लेकिन मांग को देखते हुए ज्यादा से ज्यादा लोगों को दर्शन के लिए भेजने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा, जरूरत पड़ने पर दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं को भी दर्शन कराया जा सकता है। श्रवण यात्रा को लेकर तैयारियां अंतिम दौर में हैं।

एसएफआई का विरोध: केरल के राज्यपाल ने सड़क किनारे प्रदर्शन किया, मुख्यमंत्री की आलोचना की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोल्लम (केरल)/भाषा। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान कोल्लम जिले के निलमेल में शनिवार को उनके खिलाफ 'स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया'(एसएफआई) के कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन करने पर अपने वाहन से बाहर निकले और प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सड़क किनारे बैठ गए।

स्पष्ट रूप से नाराज दिख रहे खान ने मुख्यमंत्री पिनराई विजयन पर ''राज्य में अराजकता को बढ़ावा देने'' का आरोप लगाया और इसी के साथ

राजभवन एवं राज्य में सत्तारूढ़ वाम लोकतान्त्रिक मोर्चा (एलडीएफ) के बीच तनातनी और बढ़ती प्रतीत हुई।

खान ने कहा कि वे विरोध प्रदर्शन नहीं कर रहे थे, बल्कि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) से संबद्ध एसएफआई के प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग के बाद पुलिस द्वारा उन्हें प्राथमिकी की प्रति दिखाए जाने का इंतजार कर रहे थे।

राज्य की राजधानी तिरुवनंतपुरम से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित कोल्लम के निलमेल में यह नाटकीय घटनाक्रम देखा गया।

खान दो घंटे से अधिक समय तक वहां बैठे रहे और तभी वहां से निकले जब पुलिस ने उन्हें कानून के गैर-जमानती प्रावधानों के तहत 17 एसएफआई कार्यकर्ताओं के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी की एक प्रति दिखाई।

इसके बाद राज्यपाल ने पत्रकारों से बात करते हुए विजयन पर निशाना साधते हुए कहा कि विजयन ''राज्य में अराजकता को बढ़ावा दे रहे हैं।

अपने भाई को खो चुकी दिल्ली की युवती लावारिस शवों का करती है अंतिम संस्कार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। अपने भाई को खोने से मिले दुख को मिशन में तब्दील कर दिल्ली में 26 वर्षीय एक युवती पिछले दो वर्षों से लावारिस शवों का अंतिम संस्कार कर रही है।

दिल्ली के शाहदरा इलाके में रहने वाली पूजा शर्मा लंबे अरसे से अस्पतालों में लावारिस पड़े कई शवों का अंतिम संस्कार कर चुकी हैं। जिन शवों का कोई पारिवारिक संबंध नहीं मिल पाता, उनका वह गरिमापूर्ण तरीके से अंत्येष्टि करती हैं। शर्मा ने दावा किया, पिछले दो वर्षों में मैंने करीब 4,000 ऐसे शवों का अंतिम संस्कार किया, जिनका कोई ज्ञात परिवार या संबंधी नहीं मिला। उन्होंने कहा, 13 मार्च 2022 को मेरे भाई की हत्या कर दी गई थी। तभी से मैंने अपने दुख को दूसरों का ढाढस बंधाने के स्रोत में तब्दील कर दिया। अपने जीवन की इस दुखद घटना पर प्रकाश डालते हुए पूजा ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, मामूली झगड़े में मेरे 30 वर्षीय बड़े भाई की मेरे सामने गोली मारकर हत्या कर दी गई और यह सुनकर मेरे पिता कोमा में चले गए। अपने भाई का अंतिम संस्कार करने के दूसरे दिन ही पूजा ने दूसरों की मदद करने का संकल्प लिया। पूजा ने कहा, मैं ऐसे शवों के बारे में पुलिस और सरकारी अस्पतालों से जानकारी मांगा करती थी, जिनके परिवार या फिर उनके सगे-संबंधी की कोई जानकारी नहीं होती थी। उन्होंने कहा कि अब यदि पुलिस और सरकारी अस्पताल के पास ऐसे लावारिस शव होते हैं तो वे मुझसे खुद संपर्क करते हैं। पूजा ने दावा किया कि वह अपने दादा की पेंशन से इन शवों के अंतिम संस्कार का खर्च वहन करती हैं।

उन्होंने कहा, अंतिम संस्कार में करीब एक हजार से 1,200 रुपए का खर्च आता है। मैं अपने पिता और दादी के साथ रहती हूं। मेरे पिता दिल्ली मेट्रो में संविदा आधार पर चालक के रूप में कार्यरत हैं। अपने दादा की पेंशन से मैं यह सब करती हूं। इस काम को करने में उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों और सामाजिक पूर्वाग्रह का उल्लेख करते हुए पूजा ने कहा, मैं जो काम करती हूं, उसे कई लोग वर्जित मानते हैं और मेरे दोस्तों के परिवार उन्हें मुझसे मिलने नहीं देते।

महाराष्ट्र: आयुध निर्माणी भंडारा में विस्फोट, एक कर्मचारी की मौत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भंडारा/भाषा। महाराष्ट्र के भंडारा जिले में स्थित आयुध निर्माणी भंडारा परिसर में शनिवार सुबह हुए एक विस्फोट में एक कर्मचारी की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। यह फैक्टरी भंडारा शहर के बाहरी इलाके जवाहरनगर में स्थित है। उन्होंने बताया कि घटना के बाद अधिकारियों ने तीन सदस्यीय जांच समिति गठित की है।

पुलिस ने मृतक की पहचान 52 वर्षीय अविनाश मेशाम के रूप में की है लेकिन विस्फोट किस वजह से हुआ, अब तक स्पष्ट नहीं है। फैक्टरी के प्रवक्ता की ओर से जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया, सुबह सवा आठ बजे आयुध निर्माणी भंडारा के एचईएक्स विभाग से विस्फोट की आवाज सुनी गई। विस्फोट की आवाज सुनकर आसपास के विभागों के कर्मचारी उस विभाग की ओर भागे और अविनाश मेशाम को अचेत पड़े देखा।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि उन्हें तुरंत फैक्टरी से अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि घटना के कारणों का अभी पता नहीं चला है। इसकी जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि फैक्टरी के अधिकारियों

ने मृतक के परिवार को मुआवजा और पेंशन देने के लिए आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है।

भंडारा जिले के पुलिस अधीक्षक लोहित मतानी ने कहा कि जब मेशाम विस्फोट करने के लिए इस्तेमाल होने वाले कुछ तार बना रहा था, तभी फैक्टरी परिसर में स्थित भवन में यह दुर्घटना हुई।

जवाहरनगर पुलिस थाने के सहायक निरीक्षक सुधीर बोरकुटे ने कहा कि मृतक गोंदिया जिले का रहने वाला था। उन्होंने कहा, अब तक मिली जानकारी के आधार पर इस संबंध में दुर्घटनावश मौत होने की रिपोर्ट दर्ज की गई है।

जिलाधिकारी योगेश कुंभेजकर ने कहा कि औद्योगिक सुरक्षा और स्वास्थ्य निदेशालय के एक वरिष्ठ अधिकारी विस्फोट स्थल का दौरा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल भेज दिया गया है।

लक्षद्वीप के पास फंसी नौका को भारतीय तटरक्षक ने मिनिकॉय द्वीप पहुंचाया

कोच्चि/भाषा। भारतीय तटरक्षक ने इंजन खराब होने के कारण 25 जनवरी से लक्षद्वीप तट के पास समुद्र में फंसी मछली पकड़ने वाली एक नौका को सुरक्षित तरीके से निकाल कर मिनिकॉय द्वीप पहुंचाया। यह जानकारी रक्षा विभाग की ओर से शनिवार को जारी एक बयान से मिली।

रक्षा विभाग की ओर से सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किए गए बयान में कहा गया है कि तटरक्षक पोत 'समर्थ' ने मछली पकड़ने वाली नौका 'अरुल माथा' को कठिन समुद्री परिस्थितियों के बीच से सुरक्षित रूप से निकालकर मिनिकॉय द्वीप पहुंचाया। मछली पकड़ने वाली नौका लक्षद्वीप में मिनिकॉय द्वीप से 50 समुद्री मील दक्षिण-पश्चिम में फंसी हुई थी।

बयान में कहा गया है, भारतीय तटरक्षक जहाज समर्थ ने मछली पकड़ने वाली नौका अरुल माथा (आईएनडी-टीएन-12-एमएम-5707) को खींचकर उसकी सहायता की, जो इंजन खराब होने के कारण 25 जनवरी से मिनिकॉय द्वीप से 50 समुद्री मील दक्षिण-पश्चिम में फंसी हुई थी। नौका को वहां से खींच कर सुरक्षित रूप से मिनिकॉय ले जाया गया।

आतंक वित्तपोषण
ईडी ने कश्मीर में हिजबुल आतंकवादियों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कश्मीर में आतंक के वित्तपोषण से जुड़े धन शोधन मामले में आरोप पत्र दाखिल किया है और इसमें हिजबुल मुजाहिदीन के कुछ आतंकवादियों का नाम शामिल है। संघीय एजेंसी ने शनिवार को यह जानकारी दी।

एजेंसी ने एक बयान में कहा कि आरोपपत्र 25 जनवरी को श्रीनगर में एक विशेष धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) अदालत के समक्ष दायर किया गया था।

बयान में कहा गया है कि इसमें नामित आरोपियों में मुदस्सिर अहमद शेख, मुश्ताक अहमद काम्बे और मोहम्मद इकबाल खान शामिल हैं। इसमें कहा गया है कि अदालत ने आरोप पत्र पर संज्ञान लिया है और मुकदमा शुरू करने के लिए आरोपियों को नोटिस जारी किया है।

ईडी का धन शोधन मामला जुलाई 2015 में मुदस्सिर अहमद शेख, मुश्ताक अहमद काम्बे, मोहम्मद इकबाल खान, मो. अब्बास शेख और तौसीफ अहमद शेख के खिलाफ जम्मू-कश्मीर पुलिस (कुलगाम जिला) की प्राथमिकी से जुड़ा है।

प्राथमिकी भारतीय दंड संहिता और गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत दर्ज की गई थी। अब्बास शेख और तौसीफ अहमद शेख सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में मारे गए थे।

हरियाणवी गायक मासूम शर्मा पर महिला से छेड़छाड़, मारपीट व धमकी देने का मुकदमा दर्ज

जींद (हरियाणा)/भाषा। हरियाणवी गायक मासूम शर्मा पर महिला से छेड़छाड़, मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। जुलाना थाना प्रभारी समरजीत सिंह के मुताबिक, जुलाना थाना क्षेत्र की रहने वाली महिला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि मासूम शर्मा, उनके भाई विकास व दीपक, पिता बालकराम, मां शकुंतला, हरिओम व प्रवीन और 20 अन्य लोगों ने उसके साथ मारपीट की और उसे जान से मारने की धमकी दी। अधिकारी ने बताया कि महिला ने आरोप लगाया कि आरोपियों ने उसके साथ छेड़छाड़ भी की। सिंह ने बताया कि पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी। गायक मासूम शर्मा पर पहले भी महिला से छेड़छाड़ के आरोप लग चुके हैं।

अमरावती में बांध को लेकर विरोध प्रदर्शन के दौरान किसान ने की आत्महत्या

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

अमरावती/भाषा। महाराष्ट्र के अमरावती जिले में शनिवार को एक बांध के सिलसिले में विरोध प्रदर्शन के दौरान 44 वर्षीय एक किसान ने आत्महत्या कर ली। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

पुलिस अधीक्षक विशाल आनंद ने पीटीआई-भाषा को बताया कि ऊपरी वर्धा बांध से प्रभावित किसानों का एक समूह मुआवजे की मांग करते हुए जिले के मोर्शी में आंदोलन कर रहा है। यह बांध, जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

आनंद ने बताया कि प्रदर्शनकारी किसानों में से एक ने शनिवार तड़के विरोध प्रदर्शन के लिए बनाए गए मंच पर फंदे से लटक कर आत्महत्या कर ली। एक अधिकारी ने बताया कि किसान की आत्महत्या के बाद प्रदर्शनकारियों ने इलाके में वाहनों की आवाजाही रोक दी।

अधिकारी ने कहा कि प्रदर्शनकारी प्रत्येक ग्रामीण के लिए चार एकड़ कृषि भूमि और परियोजना से प्रभावित लोगों के लिए सरकारी नौकरियों की मांग कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश में प्रतिमा को लेकर झड़प मामला, अब तक 19 आरोपी गिरफ्तार

उज्जैन (मप्र)/भाषा। मध्य प्रदेश में उज्जैन जिले के माकड़ोन में पूर्व उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा गिराए जाने के बाद दो समुदायों के सदस्यों के बीच हुई झड़प के मामले में अब तक 19 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इलाके में भारी पुलिस बल तैनात है और स्थिति शांतिपूर्ण है। माकड़ोन तहसील में कुछ लोगों द्वारा बृहस्पतिवार सुबह पटेल की प्रतिमा गिराए जाने के बाद दो समुदायों के सदस्य आपस में भिड़ गए थे और उन्होंने एक-दूसरे पर पथराव किया था। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी-ग्रामीण) नितेश भार्गव ने कहा कि झड़प के सिलसिले में अब तक कुल 19 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों पर बलवा करने और लोक सेवक को अपना कर्तव्य निभाने से रोकने के लिए आपराधिक बल का उपयोग करने का मामला दर्ज किया गया है।

सोमनाथ मंदिर की जमीन अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए मकान, झुग्गियां ध्वस्त

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गिर सोमनाथ/भाषा। गुजरात के गिर सोमनाथ जिले में सोमनाथ मंदिर के पीछे स्थित मंदिर ट्रस्ट और राज्य सरकार की लगभग तीन हेक्टेयर भूमि खाली कराने के लिए एक बड़ा अतिक्रमण रोधी अभियान शुरू किया गया। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

कलेक्टर हरजी वाधवानिया ने कहा कि सोमनाथ मंदिर का प्रबंधन करने वाले श्री सोमनाथ ट्रस्ट और राज्य सरकार की भूमि को खाली कराने के लिए अनधिकृत रूप से निर्मित 21 मकान और 153 झुग्गियों को ध्वस्त किया जा रहा है। वाधवानिया ने कहा कि तोड़फोड़ अभियान शनिवार सुबह पांच 'मामलतदारों' और लगभग 100 राजस्व अधिकारियों की उपस्थिति में शुरू हुआ।

उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह अभियान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो जाए, बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है। उन्होंने कहा कि तीन हेक्टेयर (7.4 एकड़) जमीन को राज्य राजस्व विभाग द्वारा जारी एक परिपत्र के अनुसार अतिक्रमण मुक्त कराया जाएगा और बाड़ लगाई जाएगी।

सोमनाथ मंदिर अरब सागर के तट के पास वेरावल शहर के पास प्रभास पाटन में

स्थित है। ऐसा माना जाता है कि यह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से पहला है और एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल और पर्यटक स्थल है। कलेक्टर ने कहा, हम राजस्व विभाग द्वारा जारी परिपत्र के अनुसार अनधिकृत आवासीय अतिक्रमण को हटाने और जमीन पर बाड़ लगाकर उसे सुरक्षित करने के लिए काम कर रहे हैं।

इस कवायद से पहले, हमने 25 जनवरी को अतिक्रमण किए हुए व्यक्तियों के साथ एक बैठक की थी ताकि उन्हें पूरी प्रक्रिया समझायी जा सके। उन्होंने कहा कि प्रशासन ने अतिक्रमण किए लोगों को उनके घरेलू सामान हटाने में मदद करने के लिए ट्रैक्टर और मजदूरों की उपलब्धता सुनिश्चित की है और उन्हें भोजन के पैकेट उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने मीडियाकर्मियों से कहा, दो इलाकों में अतिक्रमण था - 700 वर्ग मीटर भूमि पर 21 निर्माण और तीन हेक्टेयर भूमि पर 153 निर्माण।

गिर सोमनाथ जिले के पुलिस अधीक्षक मनोहरसिंह जाडेजा ने कहा कि अभियान सुचारू रूप से चले यह सुनिश्चित करने के लिए बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि अभियान शाम तक पूरा होने की उम्मीद है।

उन्होंने कहा, जमीन सरकार और मंदिर ट्रस्ट की है। दो एसआरपी (राज्य रिजर्व पुलिस) कंपनियां और 500 पुलिस कर्मी यहां तैनात हैं। हमने क्षेत्र के प्रवेश और निकास को सील कर दिया है। आपात स्थिति से निपटने के लिए, अग्निशामकों, त्वरित कार्रवाई बल (आरएएफ) की टीम और त्वरित प्रतिक्रिया टीम (क्यूआरटी) को तैयार स्थिति में रखा गया है।

राम मंदिर 'प्राण प्रतिष्ठा' के दम पर सफलता हासिल करने की जुगत में भाजपा की तमिलनाडु इकाई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। भाजपा की तमिलनाडु इकाई तमिल राजनीति में सफलता पाने के लिए अयोध्या में राम मंदिर 'प्राण प्रतिष्ठा' पर भरोसा कर रही है।

भाजपा का राष्ट्रीय नेतृत्व 400 से ज्यादा सीटों और 50 प्रतिशत वोट शेयर की मांग कर रहा है, पार्टी की तमिलनाडु इकाई भी कुछ सीटें हासिल करना चाहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, प्रतिष्ठा समारोह से पहले अपने 11 दिवसीय उपवास अवधि के दौरान, अयोध्या प्रस्थान से पहले तीन दिनों के लिए तमिलनाडु में थे।

मोदी ने तमिलनाडु के प्रमुख मंदिरों में सार्वजनिक यात्राएं कीं, जिनमें त्रिची में रंगनाथानंद मंदिर, रामेश्वरम मंदिर और धनुषकोडी में अरुलमिगु रामास्वामी मंदिर शामिल हैं। मोदी ने रामेश्वरम के रामनाथस्वामी मंदिर के सभी 22 कुओं में स्नान किया और मंत्रोच्चार के साथ समुद्र में डुबकी भी लगाई। इन सार्वजनिक प्रदर्शनों का वास्तव में तमिलनाडु में प्रभाव पड़ेगा और भाजपा पूरे भारत में उत्पन्न राम मंदिर लहर पर सवार होकर राज्य में जबरदस्त लाभ की उम्मीद कर रही है।

पार्टी राज्य से पांच सीटों की उम्मीद कर रही है, जिसमें कन्नियाकुमारी और कोयंबटूर शामिल हैं जहां भाजपा ने पहले जीत हासिल की थी। हालांकि, अगर अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन नहीं होता है तो 2024 के आम चुनावों के लिए तमिलनाडु में भाजपा के लिए जमीनी स्थिति अच्छी नहीं है।

प्रमुख विपक्षी दल होने के नाते, अन्नाद्रमुक अब भी तमिलनाडु की राजनीति में एक शक्तिशाली ताकत है। लगातार दस साल तक सत्ता में रहने के बाद भी वह 2021 का विधानसभा चुनाव डीएमके से मामूली अंतर से हार गई।

तमिलनाडु भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और आईपीएस अधिकारी से नेता बने के अन्नामलाई का अहंकार अन्नाद्रमुक-भाजपा गठबंधन टूटने का मूल कारण था। अन्नामलाई ने तमिलनाडु के सभी द्रविड़ आंदोलनों के प्रणेता सी. अन्नादुराई उर्फ अन्ना, जो कि द्रविड़ पार्टी से राज्य के पहले मुख्यमंत्री थे, की आलोचना की थी।

अन्नादुरई का राज्य में बहुत सम्मान किया जाता है और कई सामाजिक कल्याण योजनाएं, जिन्होंने तमिलनाडु को सामाजिक सूचकांक में शीर्ष लीग में रखा है, उनके द्वारा तैयार की गई थीं। कन्याकुमारी स्थित थिंक टैंक इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिसी एंड सोशल स्टडीज के निदेशक केआर मुकुंदन ने आईएएनएस को बताया, ''प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राज्य के प्रमुख मंदिरों की सार्वजनिक यात्राओं ने तमिलनाडु में भाजपा की किस्मत को बड़ा बढ़ावा दिया है।''

हालांकि पार्टी नेतृत्व को यह समझना चाहिए कि उन्हें द्रविड़ गौरव को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए। अन्नामलाई ने ऐसा किया और उनके अपरिपक्व कार्यों के कारण अन्नाद्रमुक को एनडीए गठबंधन छोड़ना पड़ा। इसने भाजपा को अनाथ कर दिया क्योंकि द्रविड़ प्रमुख के बिना भाजपा के लिए यहां चुनावों में छाप छोड़ना बहुत मुश्किल है।

मुकुंदन ने कहा कि उन्हें हैरानी नहीं होगी, अगर अन्नामलाई द्वारा हाल ही में किए गए हाई-पिच राजनीतिक नाटक के बाद राज्य में 2024 के आम चुनावों में भाजपा को कोई सीट नहीं मिली। अन्नाद्रमुक और भाजपा के सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि कुछ चैनल दोनों पार्टियों के बीच सुलह की दिशा में काम कर रहे थे, लेकिन अन्नामलाई का अहंकार और एकतरफ़ा रवैया इसमें बाधा का काम कर रहा था। हालांकि, भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व के सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह प्रमुख द्रविड़ पार्टी को एनडीए के पाले में वापस लाने के लिए एडप्पादी के. पलानीस्वामी (ईपीएस) से सीधे संवाद करेंगे।

अगर अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन सफल होता है, तो भाजपा कम से कम तीन सीटें जीतने में सक्षम हो सकती है, जिसमें कन्याकुमारी और कोयंबटूर के अपने मजबूत क्षेत्र और दक्षिण तमिलनाडु में एक और सीट शामिल है। हालांकि, पार्टी नेतृत्व और थिंक टैंक गठबंधन बनने पर कम से कम पांच सीटें जीतने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

वर्ष 2019 के आम चुनावों में, जहां डीएमके गठबंधन ने तमिलनाडु की 39 में से 38 सीटें जीतीं, डीएमके मोर्चे को 53.15 प्रतिशत वोट शेयर मिले, जबकि एआईएडीएमके के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन को 30.57 प्रतिशत वोट मिले। एनडीए गठबंधन में एआईएडीएमके को 19.39 फीसदी वोट मिले जबकि बीजेपी को सिर्फ 3.66 फीसदी वोट ही मिले। इससे पता चलता है कि भाजपा के लिए किसी भी द्रविड़ पार्टी के समर्थन के बिना तमिलनाडु में अपने दम पर चुनाव लड़ना कितना मुश्किल होगा।

भाजपा ने 2021 के विधानसभा चुनावों में अन्नाद्रमुक के साथ राजनीतिक गठबंधन के माध्यम से चार विधानसभा सीटें जीती थीं। जहां अन्नाद्रमुक ने 66 विधानसभा सीटें जीतकर 33.29 प्रतिशत वोट हासिल किए, वहीं भाजपा ने चार सीटें जीतीं और केवल 2.62 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया। इन आंकड़ों से साफ पता चलता है कि तमिलनाडु की चुनावी राजनीति में एआईएडीएमके बीजेपी के लिए कितनी अहम है।

जहां भाजपा राम मंदिर के मुद्दे पर एक प्रभावशाली प्रदर्शन करने में सक्षम रही है, वहीं जमीनी हकीकत राज्य में भगवा पार्टी के आगे बढ़ने में बड़ी बाधाएं पैदा करेगी। भले ही अन्नामलाई को एक अच्छा नेता माना जाता है, लेकिन गठबंधन सहयोगियों और यहां तक कि मीडिया के साथ उनका अहंकार पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व को पसंद नहीं आया है। हालांकि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व बीच का रास्ता अपनाने और देश में राम मंदिर के उत्साह को भुनाने की कोशिश कर रहा है।

मैंने महात्मा गांधी का अनादर नहीं किया: राज्यपाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि ने शनिवार को कहा कि उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर बोलते हुए महात्मा गांधी का अनादर नहीं किया और राष्ट्रपिता उनके जीवन के लिए पथप्रदर्शक रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले तीन-चार दिनों में कुछ मीडिया खबरों से यह 'गलत धारणा' बनाने की कोशिश की गई कि वह महात्मा गांधी का अनादर' कर रहे हैं, जो एक झूठ है।

राज्यपाल ने कहा, ''मैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का बहुत सम्मान करता हूं और उनकी शिक्षाएं मेरे जीवन के लिए आदर्श हैं।'' उनका यह स्पष्टीकरण तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी (टीएनसीसी) के सदस्यों द्वारा यहां दिन में किए गए आंदोलन के मद्देनजर आया है, जिसमें कथित तौर पर महात्मा गांधी का अपमान करने और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका को कमतर आंकने के लिए राज्यपाल की निंदा की गई। टीएनसीसी प्रमुख के एस अलागिरी, सांसद सु थिरुनावुक्कारासर और कांग्रेस विधायक दल के नेता के सेल्वापेरुन्थागई उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने आंदोलन में भाग लिया। राजभवन की ओर से जारी एक विज्ञप्ति में रवि के 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 127वीं जयंती पर उनके भाषण का जिक्र करते हुए कहा गया है, मेरा अभिप्राय महात्मा गांधी का अनादर करने का नहीं था, जिनकी शिक्षाएं मेरे जीवन के लिए मार्गदर्शक रही हैं।

उन्होंने कहा कि कुछ मीडिया संगठनों ने भाषण के एक अंश का चयन किया और इसमें तोड़-मरोड़' किया। उन्होंने कहा, अपने भाषण में मैंने इस बात को विस्तार से बताने की कोशिश की कि हमारे देश की आजादी में नेताजी के महत्वपूर्ण योगदान की पर्याप्त सराहना नहीं की गई है। मैंने यह बताने की कोशिश की कि 1947 में आजादी की गति और प्रक्रिया को तेज करने की वजह फरवरी 1946 का वायु सेना और रॉयल इंडियन नेवी का विद्रोह था और ये दोनों घटनाएं नेताजी से प्रेरित थीं।'

इसरो मौसम संबंधी उपग्रह के प्रक्षेपण के लिए तैयार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई/बेंगलूरु। इसरो ने शनिवार को कहा कि उसके मौसम संबंधी उपग्रह इनसेट-3डीएस को जीएसएलवी एफ14 पर प्रक्षेपण के लिए श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) एसएचएआर के लिए रवाना कर दिया गया है। उपग्रह ने यू.आर. राव उपग्रह केंद्र, बेंगलूरु में उपग्रह संयोजन, एकीकरण और परीक्षण गतिविधियों को सफलतापूर्वक पूरा किया था।

उपग्रह पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) के साथ एक उपयोगकर्ता-वित्त पोषित परियोजना है, जिसे 2275 किलोग्राम के लिफ्ट-ऑफ' द्रव्यमान के साथ इसरो के आई-2के बस प्लेटफॉर्म के आसपास संयोजित किया गया है। उपग्रह के निर्माण में भारतीय उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लिफ्ट-ऑफ द्रव्यमान रॉकेट का प्रारंभिक द्रव्यमान है। लिफ्ट ऑफ द्रव्यमान में ईंधन और ऑक्सीडाइजर का कुल द्रव्यमान शामिल होता है।

सूत्रों के मुताबिक, अंतरिक्ष एजेंसी फरवरी के मध्य में प्रक्षेपण का लक्ष्य लेकर चल रही है। इसरो ने कहा, इनसेट 3डीएस, इसरो द्वारा निर्मित एक विशिष्ट मौसम संबंधी उपग्रह है जिसका प्राथमिक उद्देश्य मौजूदा कक्षा में इनसेट-3डी और 3डीआर उपग्रहों को सेवाओं की निरंतरता प्रदान करना और इनसेट प्रणाली की क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना है।

कांग्रेस ने छात्रों के लिए लैपटॉप खरीद में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पुडुचेरी। पुडुचेरी में विपक्षी कांग्रेस जल्द ही राष्ट्रपति से मुलाकात करेगी और स्कूली छात्रों को वितरण के लिए लैपटॉप खरीदने में पुडुचेरी की सरकार द्वारा अपनाये गए तौर-तरीकों की केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) जांच की मांग करेगी। यह बात कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वी नारायणसामी ने शनिवार को यहां कही। पुडुचेरी के पूर्व मुख्यमंत्री नारायणसामी ने संवाददाताओं से कहा कि पार्टी द्वारा जल्द ही राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को एक विस्तृत अर्जी दी जाएगी, जिसमें 63 करोड़ रुपये की कीमत पर लैपटॉप की खरीद के लिए कंपनी के चयन में 'कथित भ्रष्टाचार' की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सरकार को लैपटॉप खरीदने के लिए वैश्विक निविदा आमंत्रित करनी चाहिए थी लेकिन उसने एक कंपनी तय की और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए कंप्यूटर खरीदे। उन्होंने कहा कि ऐसी कई कंपनियां थीं जो उच्च गुणवत्ता वाले लैपटॉप की आपूर्ति कर सकती थीं, लेकिन यह जानकर हैरानी हुई कि सरकार ने उन्हें क्यों नहीं चुना और लैपटॉप की आपूर्ति के लिए एकतरफा कंपनी का चयन क्यों किया।

नारायणसामी ने उपराज्यपाल तमिलिसाई सौंदरराजन पर यहां समानांतर सरकार चलाने का भी आरोप लगाया और कहा कि वह यह दावा करके केवल 'प्रचार' में लगी हुई थीं कि पुडुचेरी सरकार ने लोगों की स्थिति में सुधार के लिए कई केंद्र प्रायोजित योजनाएं लागू की हैं।

उन्होंने आरोप लगाया, 'सौंदरराजन विभिन्न स्थानों पर केवल अधिकारियों को शामिल करते हुए समारोह आयोजित कर रही हैं, जबकि मुख्यमंत्री, मंत्री और विधायक या तो केंद्र प्रायोजित योजनाओं के उद्घाटन या लक्षित वर्गों को योजनाओं का लाभ सौंपने में अनुपस्थित थे।'

उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल द्वारा समानांतर सरकार चलाने के कारण पुडुचेरी अब निराशाजनक स्थिति में है। उन्होंने दावा किया कि केंद्रीय कोष से जुड़ी केंद्र सरकार की स्मार्ट सिटी योजना को पिछले एक साल से रोक कर रखा गया है। उन्होंने मुख्यमंत्री पर 2021 में यहां विधानसभा चुनावों के दौरान लोगों से किए गए वादों को पूरा करने में विफल रहने का भी आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया, ''पुडुचेरी को राज्य का दर्जा दिलाने के लिए कुछ नहीं किया गया। पुडुचेरी को केंद्रीय वित्त आयोग में शामिल कराने के लिए मुख्यमंत्री की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए।''

महादेव ने 67 किग्रा में जीता सोना,महाराष्ट्र शीर्ष पर मज़बूत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। भारोत्तोलक महादेव वदार ने शनिवार को छठे खेलो इंडिया यूथ गेम्स में लड़कों के 67 किग्रा में एक आसान स्वर्ण पदक के साथ शीर्ष पर विराजमान महाराष्ट्र को मेजबान तमिलनाडु पर अपनी बढ़त को मज़बूत करने में मदद की। सुबह के सत्र में निशानेबाजी, भारोत्तोलन और साइकिलिंग में दो-दो स्वर्ण पदक दाँव पर थे और महाराष्ट्र कम से कम तीन पदकों पर क़ब्ज़ा चाहता था। लेकिन अंततः भारोत्तोलन में उसे केवल एक स्वर्ण, एक रजत और 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल वर्ग में एक कांस्य पदक मिल सका। इस तरह वह अपने पदकों की संख्या 29 स्वर्ण, 25 रजत और 31 कांस्य तक ले जाने में सफल रहा।

वदार ने स्नैच (113 किग्रा) और क्लीन एंड जर्क (140 किग्रा) के साथ कुल 253 के वजन के साथ स्वर्ण पदक जीता।

तमिलनाडु के पी आकाश ने रजत पदक जीता जबकि ओडिशा के दीपक प्रधान ने कांस्य पदक जीता। अंकुश लोखंडे ने जवाहरलाल नेहरू इंडोर स्टेडियम में स्थित भारोत्तोलन क्एरेना में लड़कों के 61 किग्रा वर्ग में कुल 237 किग्रा वजन उठाकर महाराष्ट्र की झोली में रजत पदक डाला। ओडिशा के सदानंद बरिहा ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी से पांच किलोग्राम अधिक वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता।

इससे पहले, केरल के साइकिल चालक अलनीस लिली क्यूबेलियो ने लड़कियों की 60 किमी व्यक्तिगत रोड रेस का स्वर्ण पदक जीता जबकि चंडीगढ़ के जय डोगरा ने ईसीआर में लड़कों की 30 किमी टाइम ट्रायल में शीर्ष स्थान हासिल किया।

इसरो के किफायती अंतरिक्ष प्लेटफॉर्म पीओईएम-3 ने सभी पेलोड उद्देश्यों को प्राप्त किया

चेन्नई/बेंगलूरु। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शनिवार को कहा कि उसके अंतरिक्ष प्लेटफॉर्म पीओईएम-3 ने अपने सभी पेलोड उद्देश्यों को सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है। पीएसएलवी ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल-3 (पीओईएम-3) पीएसएलवी-सी58 रॉकेट के पीएस4 चरण का इस्तेमाल किया है जिसने इस साल एक जनवरी को एक्सपोसेट लॉन्च किया था।

इसरो ने कहा कि पीओईएम-3 ने नौ पेलोड के साथ उड़ान भरी थी। कक्षा में 25वें दिन तक पीओईएम-3 ने 400 परिक्रमाएं पूरी कर लीं। अंतरिक्ष एजेंसी ने इसे एक विशिष्ट और किफायती मंच बताया।

इस अवधि के दौरान, प्रत्येक पेलोड को योजना के अनुसार परिचालन में लाया गया और प्रदर्शन प्रदर्शित किया गया। पीओईएम-3 एक तीन-अक्ष-नियंत्रित प्लेटफॉर्म है जिसमें पेलोड का समर्थन करने के लिए बिजली उत्पादन और टेलीकमांड तथा टेलीमेट्री क्षमताएं हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि पीओईएम-3 पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश करने से पहले लगभग 73 दिन तक परिक्रमा करता रहेगा।

'लोकसभा में शतप्रतिशत जीत का लक्ष्य लेकर दिन रात मेहनत करें'

भाजपा की विशेष कार्यकारिणी सभा में कार्यकर्ताओं ने लिया संकल्प

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। हमारे सामने लक्ष्य लोकसभा चुनाव है। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष और विधायक विजयेंद्र येडीयुरप्पा ने कहा कि लोकसभा चुनाव तक हमें आराम नहीं करना चाहिए और घर पर नहीं बैठना चाहिए।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि हमें अपने विरोधियों को हल्के में नहीं लेना चाहिए, अपनी उपलब्धियों को जनता के सामने रखना चाहिए और पार्टी की जीत के लिए दिन-रात मेहनत करनी चाहिए। वह शनिवार को शहर के पैलेस मैदान में उनकी अध्यक्षता में शुरू हुए प्रदेश भाजपा विशेष कार्यकारिणी के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे।

एक तरफ लोकसभा चुनाव आ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सैकड़ों वर्षों की तपस्या के फलस्वरूप हमारे देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में गत 22 जनवरी को अयोध्या में श्री राम के परिनिर्वाण के शुभ अवसर पर हम सभी यहां एकत्रित हुए हैं। लेकिन, हम सभी जिस शुभ घड़ी में हैं, वह पिछले कई दशकों से निरंतर संघर्षरत है। प्रभु ने याद दिलाया कि श्री रामचन्द्र के मंदिर समर्पण के लिए निरंतर संघर्ष हुआ था।

पूरे देश में ऐसा माहौल है जहां लाखों हिंदू नाच रहे हैं और भगवान राम के जीवन का जश्न मना रहे हैं। ऐसे शुभ अवसर पर केंद्र में मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार है और पिछले साढ़े नौ साल में उसने स्पष्ट विचार रखे हैं और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिए बिना सुशासन दिया है। साथ ही उन्होंने विश्लेषण किया कि इस देश को दुनिया के अग्रणी देशों में ले जाने का काम माननीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हो रहा है। हमारे प्रधानमंत्रियों ने देश के सभी क्षेत्रों में एक भी दिन आराम किए बिना विकास किया है। इसके माध्यम से वे आज भारत का नेतृत्व करने का काम कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि भाजपा कार्यकर्ताओं की, कार्यकर्ताओं के लिए, कार्यकर्ताओं की पार्टी है। आज भाजपा अपने घोषणा पत्र के सभी कार्य पूरे करते जा रही है। नरेंद्र मोदी के साहसिक नेतृत्व, दूसरी ओर स्वाभिमानी गृह मंत्री अमित शाह जी के धारा 370 को हटाने के साहसिक फैसले ने वहां की उग्रवादी गतिविधियों को आर्थिक मजबूती दी है।

इस मौके पर भाजपा के केन्द्रीय मंत्री एवीं भाजपा के राष्ट्रीय सचिव भूपेन्द्र यादव ने सभी कार्यकर्ताओं को कहा कि सभी एकजुटता के साथ राज्य में 28 में से 28 सीट जीतने का लक्ष्य लेकर कार्य करना चाहिए। केन्द्र सरकार द्वारा किए जा रहे सभी कार्यों के लिए कांग्रेस ने विरोध किया। चाहे वह जनधन खाता हो, जीएसटी हो, दलित राष्ट्रपति चयन हो सभी राष्ट्रीय हित के निर्णयों का कांग्रेस ने विरोध किया है। आज देश की राजनीति से उन्हें उखाड़ भेंकने का संकल्प आप सभी को लेना है। विकसित संकल्प यात्रा एक सच्ची गारंटी है, सच्ची गारंटी मोदी गारंटी है। पार्टी में पूर्व मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टर की वापसी एक अच्छी शुरुआत है।

बैठक में केन्द्रीय संसदीय बोर्ड के सदस्य एवं प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येडीयुरप्पा, केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी, राजीव चन्द्रशेखर, भगवंत खुबा, विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई, डीवी सदानंद गौड़ा, जगदीश शेट्टर, राज्य के पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. सी.एन. अश्वत्थनारायण, गोविंदा करजोला, के.एस.ईश्वरप्पा, पूर्व राष्ट्रीय महासचिव सी.टी. रवि, भाजपा के तत्काल पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और सांसद नलिन कुमार कटील, विधान परिषद में विपक्ष के नेता कोटा श्रीनिवास पुजारी और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सड़क दुर्घटना में वीसीके के तीन कार्यकर्ताओं की मौत, 14 घायल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु के सलेम-वृद्धाचलम हाईवे पर शनिवार को नाराइयुर में एक वैन और लॉरी के बीच आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस हादसे में विदुथलाई चिरुथिगल काची (वीसीके) के तीन कार्यकर्ताओं की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गए।

मृतकों की पहचान एन. उथिराकुमार (29), वी. युवराज (17) और ए. अंबु सेलवन के रूप में की गई है। पुलिस ने बताया कि वीसीके के 25 कार्यकर्ता शुक्रवार शाम तिरुचि के पास सिरुगनूर में एक पार्टी सम्मेलन में हिस्सा लेने के बाद वैन में कुड्डालोर जिले के भुवनगिरी से विल्लियानूर लौट रहे थे। शनिवार रात करीब 2.50 बजे जब वाहन नाराइयुर के पास था, तब चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया और वाहन विपरीत दिशा से आ रही एक लॉरी से टकरा गया।

वेप्पुर से पुलिस और अग्निशमन एवं बचाव सेवा कर्मी मौके पर पहुंचे और बचाव अभियान शुरू किया। घायलों को वृद्धाचलम, वेप्पुर और पेरम्बलुर सरकारी अस्पतालों में ले जाया गया। लॉरी ड्राइवर के सेंथिल गावस्कर (37) को पांडिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) रेफर किया गया है। जबकि वैन ड्राइवर एस चिरंजीवी (26) को तिरुचि जीएच रेफर किया गया।

।। श्री गणेशा नमः।। ।। श्री सुन्धा माताय नमः।।

हार्दिक भावभरा आमंत्रण
एक शाम श्री सुंधा माताजी के नाम
भव्य भक्ति संध्या धर्म नगरी चेन्नई में
दि. 28.01.2024, रविवार, सायं 4.00 बजे से
स्थल : श्री राजेश्वर भवन
18, तुलसीगम स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई
* मुख्य अतिथि *
श्री रविचन्द्रन (रेलवे बोर्ड मेंबर पीएसी)
श्री पवनकुमार (चेन्नई सेन्ट्रल भाजपा जिला सचिव)
आकर्षक : श्री राम दरबार झांकी

गायक :
माधुरी वैष्णव बालोतरा
नरसी सिंह, अजित

मंच संचालन : डार्वीन शर्मा
* आयोजक *
श्री सुंधा माताजी भक्त मंडल, चेन्नई

भाजपा सरकार के काम को जनता तक पहुंचाने के लिए प्रभावी प्रचार की जरुरत : सीपी जोशी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष डा सी पी जोशी ने वर्तमान समय में प्रिंट मीडिया, डिजिटल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तीनों का बड़ा महत्व बताते हुए कहा है कि भाजपा सरकार आमजन के हित में श्रेष्ठ कार्य कर रही है, इसे मीडिया के माध्यम से जन जन तक पहुंचाने के लिए प्रभावशाली प्रचार की जरुरत है।

जोशी शनिवार को यहां भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित मीडिया और सोशल मीडिया की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल के दौरान देश में इतना काम हुआ है वहीं प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद मात्र 50 दिनों में ही मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में जो काम हुए वो कांग्रेस के पांच सालों में भी नहीं हो पाए।

उन्होंने कहा कि साढ़े चार सौ रूपये में गैस सिलेण्डर दिया जाने लगा, जिन लोगों ने पेपरलीक कर युवाओं का भविष्य खराब किया उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचाने के लिए एसआईटी का गठन, अपराधियों पर कड़ी कार्रवाई करने के लिए एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स का गठन किया और अपराध एवं अपराधियों पर तुरंत एक्शन लेने के लिए सीबीआई पर राज्य सरकार की स्वीकृति की बाध्यता समाप्त करने जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों से भ्रष्टाचार और अपराध करने वालों की नींद उड़ चुकी है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में प्रिंट मीडिया, डिजिटल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तीनों का ही बड़ा महत्व है, ये अपनी प्रभावी छाप छोडते हैं। डिजिटल मीडिया की ताकत से आज दुनिया में किसी भी स्थान की खबर हमें शीघ्र मिल जाती है।

इसके माध्यम से आज हम अपनी बात तुरंत ही देश-दुनिया में पहुंचा सकते है, इसलिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि जिस विषय पर हम बात करे हमें उसका पूरा ज्ञान होना चाहिए।

जोशी ने लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से राजस्थान में सभी 25 सीटों पर कमल खिलाने के लक्ष्य को लेकर काम करने का आह्वान करते हुए कहा कि जितना बोलने के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं के पास है उतना देश के अन्य किसी राजनीतिक दल के पास नहीं है। उन्होंने कहा कि मोदी ने जो काम पिछले दस वर्षों में किया वो पिछले साठ सालों में कोई भी सरकार नहीं कर पाई। मोदी के नेतृत्व देश का विकास और अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। दुनिया में देश का वैभव बढ़ा है, गरीब कल्याण, किसान कल्याण, युवाओं के सपनों की उड़ान, नारी सशक्तिकरण एवं जन कल्याणकारी योजनाओं की दृष्टि से अकल्पनीय काम हुए है।

कार्यशाली में राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी, राज्य के उद्योग मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच, प्रदेश मंत्री एवं आईटी-मीडिया-सोशल मीडिया प्रभारी पिंकेश पोरवाल, मीडिया विभाग के संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, सोशल मीडिया विभाग के संयोजक हीरेंद्र कौशिक, आईटी विभाग के संयोजक धनराज सोलंकी सहित इन विभागों के पदाधिकारी मौजूद थे।

आईआईटी-जोधपुर ने यातायात दबाव, सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के उद्देश्य से एक तकनीक विकसित की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जोधपुर। राजस्थान के जोधपुर में स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) ने एक ऐसी अत्याधुनिक तकनीक विकसित करने का दावा किया है जिससे यातायात दबाव और सड़क दुर्घटनाओं में कमी आएगी। संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग द्वारा विकसित 'नोवेल मैक-आधारित प्रमाणीकरण योजना' (एनओएमएएस) का उद्देश्य न केवल वाहन सुरक्षा को बढ़ाना है, बल्कि देश की सड़कों पर विभिन्न चुनौतियों का समाधान भी करना है। इस तकनीक को विकसित करने में शामिल एक प्रोफेसर ने कहा कि इस तकनीक के जरिये सड़क की स्थिति, दुर्घटनाओं और यातायात जाम के संबंध में आंकड़ों को उपलब्ध कराकर सड़क सुरक्षा को बढ़ाना है।

'इंटरनेट ऑफ व्हीकल्स नेटवर्क' के माध्यम से एकत्र और साझा किये गये आंकड़ों का विश्लेषण दुर्घटना-संभावित क्षेत्रों और सड़क की स्थिति की पहचान करने के लिए भी किया जा सकता है।

यह तकनीक 'इंटरनेट ऑफ व्हीकल्स' यानी आइओवी नेटवर्क के आधार पर काम करती है। कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर देबासिस दास ने कहा कि इस तकनीक सड़क सुरक्षा को लेकर महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास किया गया है।

राजस्थान में परंपरागत उत्साह से मनाया गया गणतंत्र दिवस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में 75वां गणतंत्र दिवस शुक्रवार को परंपरागत उत्साह के साथ मनाया गया और पूरे राज्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। राज्य स्तरीय समारोह शुक्रवार सुबह जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित हुआ। यहां राज्यपाल कलराज मिश्र ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। उन्होंने इसके बाद परेड का निरीक्षण किया और सलामी गारद द्वारा प्रस्तुत मार्च पास्ट की सलामी ली। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी भी मौजूद थे।

उल्लास, उमंग और उत्साह से मनाए गए गणतंत्र दिवस पर्व में समारोह स्थल पर हाड़ीरानी महिला बटालियन, पुलिस आयुक्तालय जयपुर, जीआरपी, राजस्थान कारागार विभाग, पंजाब पुलिस, एसडीआरएफ, तीसरी बटालियन आरएसी, बॉर्डर होमगार्ड, अरबन होमगार्ड, एनसीसी की आर्मी, एयरविंग और नेवल विंग, स्काउट एवं गाइड, एमजीडी स्कूल आदि की टुकड़ियों ने परेड में हिस्सा लिया। परेड का नेतृत्व भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी निश्चय प्रसाद एम. ने किया।

समारोह में महाराष्ट्र के कलाकारों द्वारा सौंगी मुखोटों, पश्चिम बंगाल के कलाकारों द्वारा छाऊ, गुजरात के कलाकारों द्वारा डांडिया रास की प्रस्तुति हुई, वहीं राजस्थान के कलाकारों द्वारा आंगी गैर, घूमर, कच्छी घोड़ी आदि के मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए। इसी तरह स्कूली बच्चों ने भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के गुणगान के साथ विकसित भारत पर आधारित गीत, संगीत, नृत्य आदि प्रस्तुत किए गए। स्टेडियम में उदयपुर के विकास जानने के निर्देशन में कलाकारों ने अपनी यह प्रस्तुतियां दी।

बाद में मादक पदार्थों और अन्य अपराधों से जुड़े अपराधियों को पकड़ने में पुलिस और श्वान की भूमिका दर्शाते विशेष करतब प्रदर्शन भी हुए। स्टेडियम में राजस्थान पुलिस और सेना के जवानों द्वारा घुड़सवारी के साथ शौर्य प्रदर्शन किया गया। समारोह में एमजीडी स्कूल, भारतीय सेना और राजस्थान पुलिस के सेन्ट्रल बैण्ड ने सधे कदम-ताल में देशभक्ति गीतों संग मधुर धुनों की प्रस्तुतियां दी।

इससे पहले राज्यपाल ने अमर जवान ज्योति पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को नमन किया और मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की। राज्य के सभी जिलों में जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह हुए जहां मंत्रियों ने तिरंगा फहराया। विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्यालयों, विभागीय मुख्यालयों, विभिन्न स्कूल-कॉलेज में भी गणतंत्र दिवस समारोह हुए।

राजे से उनके आवास पर मिले मुख्यमंत्री शर्मा

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने यहां पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे से उनके आवास पर मुलाकात की। शर्मा सिविल लाइंस स्थित राजे के सरकारी निवास पहुंचे और करीब बीस मिनट तक वहां रुके।

उल्लेखनीय है कि दिसंबर में राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बहुमत मिलने के बाद राजे को मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे माना जा रहा था। हालांकि, पार्टी आलाकमान ने 12 दिसंबर को इस पद के लिए पहली बार विधायक बने भजनलाल शर्मा को चुना।

राजस्थान में अवैध खनन को रोकने के लिए बड़े खनन क्षेत्रों का ड्रोन से होगा सर्वे : अधिकारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में अवैध खनन गतिविधियों के खिलाफ जारी राज्यव्यापी अभियान के तहत आवश्यकता होने पर बड़े खनन क्षेत्रों में ड्रोन से सर्वे करवाया जाएगा ताकि इस तरह की गतिविधियों को रोका जा सके। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। राज्य खान सचिव ने शनिवार को विभागीय अधिकारियों की बैठक में यह निर्देश जारी किया।

एक आधिकारिक बयान के अनुसार अवैध खनन गतिविधियों के खिलाफ चलाये जा रहे राज्यव्यापी अभियान में बड़े खनन क्षेत्रों में आवश्यकता होने पर ड्रोन के माध्यम से सर्वे कराकर अवैध खनन गतिविधियों पर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। बैठक में राज्यव्यापी संयुक्त अभियान के तहत अवैध खनन गतिविधियों के स्रोत को ही समाप्त करने पर जोर दिया गया ताकि इस अवैध खनन गतिविधियों पर प्रभावी रोक लग सके। खान सचिव आनन्दी ने खान विभाग के अधिकारियों से इस बाबत डिजिटल तरीके से बैठक की।

उन्होंने खातेदारी भूमि (जिन लोगों के पास खेती के लिए जमीन नहीं होती, उन्हें सरकार जमीन आवंटित करती है।) पर हो रहे अवैध खनन के मामलों में भारतीय दंड संहिता की धारा 177 में कार्रवाई कर राजस्व अधिकारियों को खातेदारी निरस्तीकरण के प्रस्ताव भेजने को कहा। बैठक में बताया गया कि अकेले भीलवाड़ा में ही खातेदारी पर अवैध खनन के 70-75 मुकदमे चिन्हित कर राजस्व अधिकारियों को भेजे जा चुके हैं। वहीं अन्य स्थानों पर भी इस तरह के मुकदमे तैयार कर राजस्व अधिकारियों को भेजने को कहा गया। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) से लगते सीमावर्ती इलाकों में अवैध खनन और परिवहन की प्रभावी जांच के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की मंशा अवैध खनन को पूरी तरह से रोकना है और अधिकारियों को सरकार की इस मंशा का समझते हुए सख्त से सख्त कार्रवाई करनी होगी।

पढ़ाई का मकसद पास होना नहीं बल्कि उच्च गुणवत्ता होनी चाहिए : दिलावर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। गणतंत्र दिवस के अवसर पर शिक्षा एवं पंचायत राज मंत्री मदन दिलावर ने शुक्रवार को कोटा जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नयागांव के वार्षिक उत्सव समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेकर सुहाना सर्दी कार्यक्रम के तहत कक्षा 1 से 5 तक के बच्चो को स्वेटर वितरित किये।

शिक्षा मंत्री ने कक्षा 9 की छात्राओं को साइकिल भी वितरित की। कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बच्चो को शिक्षा, सुसंगत एवं संस्कार का महत्व बताया। उन्होने कहा कि इन तीनो के समन्वय से ही एक जिम्मेदार नागरिक बना जा सकता है। उन्होंने सभी को राममंदिर निर्माण एवं गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी। उन्होंने मार्यादा पुरषोत्तम राम के आचरण से सीख लेने का आह्वान किया। उन्होंने सूर्य सप्तमी के दिन सूर्य नमस्कार करने का आह्वान करते हुए कहा कि इससे स्वस्थ शरीर, स्वस्थ भारत का निर्माण होगा। उन्होंने कहा कि सूर्य ऊर्जा प्रकाश और सकारात्मकता का प्रतीक है, इसलिए सूर्य नमस्कार को सकारात्मकता की मानसिकता से करे।

उन्होंने प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन की बात करते हुए सभी को नियमित रूप से स्वच्छता में योगदान करने का संकल्प भी दिलवाया।

उन्होंने कहा कि पढाई का मकसद सिर्फ पास होना नहीं होना चाहिए बल्कि शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण होनी चाहिए जिसमें बच्चों की तार्किक शक्ति का विकास हो। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा लगभग 1000 स्वेटर एवं 200 साईकल वितरित की गई हैं। स्कूली छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य, संगीत की प्रस्तुतियां भी दी।

सीबीईओ ऋतु शर्मा ने बताया कि सुहाना सर्दी संस्था द्वारा इस कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री के माध्यम से सर्दी से बचाव के लिए छात्र छात्राओं को स्वेटर वितरित किये गए। मंत्री ने भामाशाह प्रवीण सैनी का सम्मान करते हुए उनको ऐसे अच्छे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने राम गोपाल गहलोत को समाज एवं शिक्षा में सराहनीय योगदान के लिए सम्मानित किया।

देश की आजादी छीनने का काम कर रही है केंद्र सरकार : डोटासरा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। कांग्रेस की राजस्थान प्रदेश इकाई के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने शुक्रवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि केंद्र सरकार देश की आजादी छीनने का काम कर रही है। डोटासरा ने कहा कि देश संविधान से चलता है जिसका पालन केंद्र सरकार नहीं कर रही है। गणतंत्र दिवस पर पार्टी कार्यालय पर तिरंगा फहराने के बाद उन्होंने पत्रकारों से कहा, आज केंद्र में जिस प्रकार की सत्ता काम कर रही है... वह संविधान की धज्जियां उड़ा रही है ...संविधान को मान नहीं रहे हैं। जिस संविधान से हमारा देश चलता है ... जिसमें बोलने, पढ़ने की आजादी है ... लेकिन आज जन प्रतिनिधियों को बात रखने की आजादी नहीं दी जा रही है। उन्होंने कहा, एक तरीके से देश की आजादी छीनने का काम केंद्र की सरकार कर रही है।

उन्होंने कहा कि केवल संसद की सुरक्षा का मुद्दा उठाने पर 150 सांसदों को निलंबित कर दिया गया। उन्होंने कहा, जो कानून जन प्रतिनिधियों से चर्चा के बाद पारित होना चाहिए, उन कानूनों को आनन फानन में पारित करा लिया गया। डोटासरा ने आरोप लगाया कि देश में जिस तरह का माहौल है उससे संविधान खतरे में पड़ गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ता लोकतंत्र को बचाने के लिए काम करेंगे।

ट्रैक्टर-ट्रॉली की टक्कर में तीन लोगों की मौत

झुंझुनू। राजस्थान में झुंझुनू जिले के उदयपुरवाटी में इंद्रपुरा नर्सरी के पास ईंटों से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली और पिकअप में टक्कर में तीन लोगों की मौत हो गई और एक घायल हो गए।

थाना प्रभारी मांगीलाल मीणा ने बताया कि ईंटों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली गत रात्रि उदयपुरवाटी से झुंझुनू की तरफ जा रही थी। इसी दौरान सामने से एक पिकअप आ रही थी। इंद्रपुरा नर्सरी के पास पिकअप अनियंत्रित हो गई और साइड से ट्रॉली से टकरा गई। हादसा इतना भयंकर था कि पिकअप पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई।

इंडिया गठबंधन आने वाले समय में हो जाएगा तार-तार : राजेंद्र राठौड़

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भरतपुर। बीजेपी ने आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। लोकसभा चुनावों को देखते हुए बीजेपी ने पूरे देश में 147 क्लस्टर तैयार कर दिए हैं। भाजपा नेता राजेंद्र राठौड़ को एक कलेक्टर का प्रभारी बनाया गया है। जिसमें तीन लोकसभा सीटें भरतपुर, सवाई माधोपुर, करौली-धौलपुर आती हैं। शनिवार को राजेंद्र राठौड़ भरतपुर पहुंचे और भाजपा नेता और कार्यकर्ताओं की बैठक ली। राजेंद्र राठौड़ ने कहा की, कांग्रेस पार्टी के करीब एक दर्जन नेता जो कई संभागों से आते हैं। वह भाजपा में आने की कोशिश कर रहे हैं। फिलहाल उनका नाम उजागर करना ठीक नहीं है। जब किसी जहाज के अंदर नीचे से बड़ा सुराख हो जाता है और, जहाज में पानी भरने लगता है तो लोग उसमें से कूद कर सबसे पहले किनारा पकड़ने की कोशिश करते हैं। इस तरह किनारा पकड़ने वाले कांग्रेस के बड़े दिग्गज एक दर्जन से ज्यादा नेता ऐसे हैं जो, इस काम में लगे हुए हैं लेकिन, अभी उनका नाम उजागर करना उचित नहीं होगा।

सांभर उत्सव को कच्छ रण उत्सव की तर्ज पर किया जाएगा विकसित : दीयाकुमारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान की उपमुख्यमंत्री एवं पर्यटन मंत्री दीया कुमारी ने प्रसिद्ध सांभर झील क्षेत्र में पर्यटन की बहुत संभावनाएं बताते हुए कहा है कि यहां पर्यटन एवं रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के साथ सांभर उत्सव को गुजरात के कच्छ रण उत्सव की तर्ज पर विकसित किया जाएगा।

दीया कुमारी शुक्रवार को सांभर लेक में विभाग एवं जयपुर जिला प्रशासन की ओर से आयोजित तीन दिवसीय सांभर उत्सव के शुभारंभ के दौरान यह बात कही। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि यहां कि सभी संभावनाओं पर तत्काल काम शुरू करे और सांभर उत्सव को कच्छ के रन फेस्टिवल की तर्ज पर विकसित करे। उन्होंने कहा कि सांभर लेक बहुत बड़े क्षेत्र में है और यह रामसर साईट जहां लाखों की संख्या में फ्लेमिंगो और अन्य विदेशी पक्षी प्रवास के लिए आते है। यदि यहां की संभावनाओं पर काम कर सुविधाएं विकसित की जाए तो यह बड़ा पर्यटन स्थल बन सकता है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का पूरा प्रयास रहेगा कि आने वाले दिनों में सांभर अन्तरराष्ट्रीय मानचित्र पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराए। उन्होंने कहा कि सांभर का विकास पिछले पांच साल से ठप्प था लेकिन अब राज्य सरकार का पूरा प्रयास रहेगा कि सांभर का विकास हो। उन्होंने सांभर में पर्यटन की अपार संभावनाएं बताते हुए कहा कि पर्यटन विभाग सैलानियों के लिए पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाएं विकसित करने पर भी जोर देगा। उन्होंने कहा कि पर्यटन विभाग के जरिए राज्य सरकार का प्रयास रहेगा कि सांभर और इसके आस-पास के कस्बों का विकास करते हुए यहां पर पर्यटन एवं रोजगार दोनों बढ़ाये जाये।

इस दौरान उन्होंने पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी, फैंसी काइट आदि का भी अवलोकन किया । उन्होंने नरियासर मोड़ के पास सांभर लेक में बर्ड वॉचिंग भी की। इस दौरान उन्होंने कहा कि फ्लेमिंगो सहित अन्य कई प्रजातिओं के लाखों पक्षी हर वर्ष यहां आते है। इनके नेचुरल हैबिटेट को संरक्षित किया जाये। पर्यटन विभाग के उपनिदेशक उपेंद्र सिंह शेखावत ने सांभर उत्सव के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस उत्सव में सैलानियों को प्रदेश की कला व लोक संस्कृति के साथ साथ विरासत व परंपराओं को नजदीक से देखने का मौका मिलेगा। शेखावत ने बताया कि सांभर उत्सव के दौरान सैलानियों को धार्मिक-विरासत व सहासिक पर्यटन को मेल देखने को मिलता है वहीं लोक-कला संस्कृति के साथ ही नमक उत्पादन की प्रक्रिया को सैलानी समझ पाते हैं। यहां पर्यटकों के लिए ट्रेन से बर्ड वॉचिंग,साल्ट लेक विजिट एवम नमक निकालने की प्रक्रिया को देखने की सुविधा उपलब्ध है। उत्सव के दौरान सांभर टाउन हैरिटेज वाक,साइक्लिंग टूर, फैंसी काइट फ्लाइंग, फोटोग्राफी कंपीटिशन , दीपोत्सव , सांस्कृतिक संध्या आदि कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे।

सांभर उत्सव के शुभारंभ के मौके पर जयपुर की खासा कोठी से सुबह आठ बजे मोटरसाइकिल रैली सांभर लेक टाऊन के लिए रवाना हुई और झपोक पहुंची जहां मोटरसाइकिल रैली सवारों का स्वागत किया गया। यहां पर आर्ट एण्ड क्राफ्ट स्टॉल, फोटोग्राफी एग्जिबिशन भी लगाई गई। सवरे से लेकर शाम तक यहां पर फैन्सी काइट फ्लाइंग, सैलानियों के लिए ऊंट गाड़ी की सैर, पैरासीलिंग आदि एडवेंचर टूरिज्म गतिविधियों का आयोजन किया गया।

'एक राष्ट्र, एक विधान मंच' पर कार्य जारी, विधायिका की छवि उसके सदस्यों के आचरण पर निर्भर : मोदी

मुंबई/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि उन्हें खुशी है कि संसद और राज्य विधायिकाएं 'एक राष्ट्र, एक विधान मंच' के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम कर रहे हैं। उन्होंने यहां 84वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन (एआईपीओसी) को ऑनलाइन माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि कुछ राजनीतिक दल अपने सदस्यों के आपत्तिजनक व्यवहार पर अंकुश लगाने के बजाय उनके समर्थन में उतर आते हैं। उन्होंने कहा कि यह संसद या विधानसभाओं के लिए अच्छी बात नहीं है।

प्रधानमंत्री ने कहा, वर्ष 2021 में, आपके साथ चर्चा के दौरान मैंने 'एक राष्ट्र, एक विधान मंच' के बारे में बात की थी। मुझे खुशी है कि हमारी संसद और राज्य विधानसभाएं अब ई-विधान और डिजिटल संसद मंचों के माध्यम से इस लक्ष्य पर काम कर रही हैं। 'एक राष्ट्र, एक विधान मंच' परियोजना का उद्देश्य सभी विधानमंडलों की कार्यवाही को एक ही डिजिटल मंच पर उपलब्ध कराना है। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि विधायिका की छवि उसके सदस्यों के आचरण पर निर्भर करती है। मोदी ने कहा, एक समय था जब सदन में अगर कोई सदस्य नियम तोड़ता था और उस सदस्य के खिलाफ कार्रवाई होती थी तो सदन के वरिष्ठ सदस्य उनसे बात करते थे ताकि भविष्य में वह गलती को न दोहराएं और सदन के नियम न तोड़ें। प्रधानमंत्री ने कहा, लेकिन, आजकल कुछ राजनीतिक दल ऐसे सदस्यों के समर्थन में खड़े होते हैं और उनकी गलतियों का बचाव करते हैं। यह संसद या राज्य विधायिकाओं के लिए अच्छा नहीं है।

नीतीश के राजग के साथ जाने को जनता उचित नहीं मानेगी, चुनाव में फैसला करेगी जनता : मोहन प्रकाश

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस के बिहार प्रभारी मोहन प्रकाश ने शनिवार को कहा कि नीतीश कुमार के फिर से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में जाने के कदम को राज्य की जनता शायद उचित नहीं माने और आगामी चुनाव में जनता निर्णय कर देगी। प्रकाश ने यह भी कहा कि राजनीति में कभी शून्यता नहीं रहती है और आने वाला चुनाव इस बात की पुष्टि कर देगा कि बिहार के लोग राजनीतिक रूप से बहुत जागरुक हैं। उन्होंने यह टिप्पणी उस वक्त की है, जब बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सत्तारूढ़ 'महागठबंधन' को छोड़ने और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में शामिल होने की योजना बनाने के मजबूत संकेत मिल रहे हैं। प्रकाश ने संवाददाताओं से कहा, राजनीति में कभी शून्यता नहीं रहती। बिहार की जनता किसी भी प्रदेश के मुकाबले राजनीतिक रूप से ज्यादा जागरुक है। बिहार की जनता आने वाले चुनाव में निर्णय कर देगी। आगे आना वाला चुनाव इस बात की पुष्टि करेगा।

एटीएस ने 97,500 रुपए की नकली मुद्रा जब्त की, दो तस्करों को गिरफ्तार किया

लखनऊ/भाषा। उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) ने बांग्लादेश से लाकर राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में कथित तौर पर जाली भारतीय मुद्रा की तस्करी करने के मामले में दो लोगों को शनिवार को वाराणसी से गिरफ्तार किया है और उनके पास से 97,500 रुपए की जाली मुद्रा भी बरामद की गई। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बयान में यह जानकारी दी।

उप्र के पुलिस महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) प्रशांत कुमार ने एक बयान में कहा कि बांग्लादेश से जाली भारतीय मुद्रा को पश्चिम बंगाल के सहयोगियों के माध्यम से फरक्का, मालदा के रास्ते उत्तर प्रदेश में लाकर अलग-अलग जिलों में तस्करी करने वाले गिरोह के दो सदस्यों-प्रतापगढ़ के निवासी दीपक कुमार और इसी चंदन सैनिक को वाराणसी से आज सुबह गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि आरोपियों के कब्जे से 97,500 रुपए की जाली मुद्रा और पश्चिम बंगाल आने जाने के फ्लाइट और रेल टिकट बरामद किए हैं। बयान में कहा गया कि एटीएस को सूचना मिली थी कि राज्य के कुछ लोग जाली भारतीय मुद्रा की तस्करी करने वाले पश्चिम बंगाल के गिरोह के संपर्क में है और बांग्लादेश में छपने वाली जाली मुद्रा यहां लाकर उत्तर प्रदेश के जिलों में तस्करी करते हैं। एटीएस के अनुसार दीपक कुमार और चंदन सैनिक तस्करी के कई मामलों में आरोपी हैं। अभियुक्त दीपक कुमार पूर्व में गांजा तस्करी के मामले में मांधाता थाने से और चंदन सैनिक दो बार गांजा तस्करी एवं वाहन चोरी के आरोप में जेल जा चुका है।

अब पराली और गोबर बनेगा किसानों की अतिरिक्त आय का जरिया : योगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बदायूं (उत्तर प्रदेश)/भाषा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) प्लांट से ना केवल पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी बल्कि किसानों की आय भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि इससे किसानों द्वारा खेतों में पराली जलाने की बहुत बड़ी समस्या का समाधान होगा।

योगी ने कहा कि जिस पराली को पहले जला दिया जाता था अब ये हमारे किसानों की अतिरिक्त आमदनी का माध्यम बनेगा। इसके साथ ही गोबर से भी किसानों को अतिरिक्त आय होगी। सीबीजी प्लांट ना केवल किसान और पशुपालकों के लिए, बल्कि युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यहां दातागंज विधानसभा के सैंजनी गांव में सीबीजी प्लांट का उद्घाटन करने पहुंचे थे। हिन्दुस्तान पेट्रोलियम द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस व आवासन एवं शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि आर्थिक रूप से विपन्न क्षेत्र में सीबीजी प्लांट पर्यावरण की रक्षा, अन्नदाता किसानों की आमदनी, युवाओं को रोजगार और नए उद्यम स्थापित करने का नया माध्यम बनने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने प्लांट की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी का आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के आठ जिलों जौनपुर, अमेठी, सीतापुर, फतेहपुर, बहराइच, बरेली, कन्नौज और बदायूं में सीबीजी प्लांट लगाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बदायूं में 133 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित सीबीजी प्लांट 50 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें प्रतिदिन 100 मीट्रिक टन धान की पराली का उपयोग करते हुए 14.25 मीट्रिक टन बायोगैस का उत्पादन हो सकेगा। साथ ही 65 मीट्रिक टन ठोस जैविक खाद का प्रतिदिन उत्पादन भी होगा। इससे प्राकृतिक और कच्चे तेल के आयात में कमी आएगी, साथ ही साथ प्रदूषण में भी कमी आएगी। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में ये संयंत्र सहायक होगा और तो और जैव उर्वरक के प्रयोग से मिट्टी में कार्बन तत्व की वृद्धि होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में राज्य में 100 सीबीजी प्लांट लगाए जाएंगे।

भाजपा गैर-राजनीतिक लोगों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित कर रही : मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गुवाहाटी/भाषा। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शनिवार को कहा कि भाजपा राज्यों के विकास के लिए गैर-राजनीतिक लोगों को पार्टी में शामिल करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। उन्होंने कहा कि पार्टी नेतृत्व ने उन्हें पश्चिम बंगाल, ओडिशा और बिहार समेत पूर्वी राज्यों में अभियान की निगरानी की जिम्मेदारी सौंपी है।

शर्मा ने सोनितपुर जिले में एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओं से कहा, हम गैर-राजनीतिक लोगों या कम से कम उन लोगों को पार्टी में लाने की कोशिश कर रहे हैं जो अब तक गैर-राजनीतिक रहे हैं, ताकि वे भाजपा के माध्यम से राज्यों के विकास में योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि पार्टी अधिक से अधिक संख्या में वकीलों, चिकित्सकों, इंजीनियर, सीए और ऐसे ही पेशेवर लोगों को पार्टी में लाने की कोशिश कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा, पूर्वी राज्यों के लिए यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई है। इसलिए, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और बिहार जैसे राज्यों में हम गैर-राजनीतिक लोगों को पार्टी में लाने की कोशिश कर रहे हैं।

उत्तर एवं पूर्वी सिक्किम के बीच सड़क सम्पर्क आंशिक रूप से बहाल, अक्टूबर में बाढ़ में टूटा था : बीआरओ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गुवाहाटी/भाषा। उत्तर और पूर्वी सिक्किम के बीच सड़क संपर्क आंशिक रूप से बहाल कर दिया गया है और स्थायी सम्पर्क अगले साल अप्रैल तक कायम होने की उम्मीद है। यह सड़क सम्पर्क पिछले साल अक्टूबर में बाढ़ के दौरान टूट गया था। सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।

बीआरओ के अतिरिक्त महानिदेशक (पूर्व) पी के एच सिंह ने बताया कि सिक्किम के सभी क्षतिग्रस्त हिस्सों में बहाली का काम शुरू हो गया है, लेकिन ये सड़कें वर्तमान में केवल 20 टन का भार ही सहन कर सकती हैं, सामान्य 70 टन का नहीं। उन्होंने बताया कि हिमनद झील के फटने से आयी बाढ़ ने हिमालयी राज्य में तीस्ता नदी के किनारे बनी मुख्य सड़कें गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गई थीं और चुंगथांग से आगे लाचेन-लाचुंग घाटी मुख्य भूमि से कट गई थी। सिंह ने कहा कि चुंगथांग से लाचेन और नागा से टूंग तक की सड़कें पूरी तरह से बह गई थीं, जो उत्तरी सिक्किम की जीवन रेखाएं हैं। उन्होंने कहा कि साथ ही जीमा, चुंगथांग और टूंग में पुल भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए थे। उन्होंने कहा कि इस आपदा ने उत्तरी सिक्किम की ओर जाने वाली सभी संचार लाइन पर कहर बरपाया था। अक्टूबर में उत्तरी सिक्किम में ल्होनक झील पर अचानक बादल फटने से तीस्ता नदी में बाढ़ आ गई थी, जिससे कम से कम 50 लोगों की मौत हो गई थी।

'आप के 7 विधायकों को खरीदने, दिल्ली सरकार को गिराने का षड्यंत्र रचा जा रहा'

नई दिल्ली/भाषा। आम आदमी पार्टी (आप) ने शनिवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दिल्ली में उसकी सरकार को गिराने के लिए उसके सात विधायकों को 25-25 करोड़ रुपए देने की पेशकश की है। वहीं, भाजपा की दिल्ली इकाई ने इन आरोपों का खंडन किया और उन सात विधायकों तथा इस प्रस्ताव के साथ उससे संपर्क करने वालों के नाम सार्वजनिक करने की आप को चुनौती दी।

आप ने दावा किया कि पार्टी के एक विधायक से संपर्क करने वाले व्यक्ति की रिकॉर्डिंग उपलब्ध है और जिसे बाद में जारी किया जाएगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा कि ''इन्होंने'' (भाजपा) उनकी पार्टी के सात विधायकों से संपर्क किया और उन्हें चेतावनी दी कि आप संयोजक को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। केजरीवाल ने कहा, पिछले दिनों इन्होंने दिल्ली के हमारे सात विधायकों से संपर्क कर कहा- 'कुछ दिन बाद केजरीवाल को गिरफ्तार कर लेंगे। उसके बाद विधायकों को तोड़ेंगे'। भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने पलटवार करते हुए कहा, इससे पता चलता है कि केजरीवाल राजनीतिक रूप से कितने हताश हो गए हैं। उनका यह निराधार आरोप खुद को राजनीतिक रूप से जिंदा रखने की कोशिश है।

सपा ने लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन की घोषणा की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। समाजवादी पार्टी (सपा) ने लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन की शनिवार को औपचारिक घोषणा कर दी और सीट बंटवारे को अंतिम रूप दे दिया। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने 'एक्स' पर गठबंधन की घोषणा की। यादव ने पोस्ट में कहा, कांग्रेस के साथ 11 मजबूत सीट से हमारे सौहार्दपूर्ण गठबंधन की अच्छी शुरुआत हो रही हैये सिलसिला जीत के समीकरण के साथ और भी आगे बढ़ेगा।

इसी पोस्ट में उन्होंने कहा कि 'इंडिया' की टीम और 'पीडीए' की रणनीति इतिहास बदल देगी। सपा के मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने से कहा, हमने (सपा) उन्हें (कांग्रेस) 11 सीटों की पेशकश की है, ताकि हमारे बीच में सम्मानजनक आपसी समन्वय बना रहे और हम भाजपा को हराना चाहते हैं। चौधरी ने यह भी कहा कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व लगातार कांग्रेस के संपर्क में है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित सीटों की संख्या, जो अभी 11 है भविष्य में उसके बढ़ने की संभावना नहीं है। सपा के मुख्य प्रवक्ता ने कहा, हमने कांग्रेस को (उप्र में) 11 सीटें और राष्ट्रीय लोक दल को 7 सीटें (कुल 18) दी हैं। लोस चुनाव में सपा 62 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। सपा के अन्य वरिष्ठ नेता राजपाल कश्यप से जब सपा द्वारा कांग्रेस को दी गई 11 सीटों के नाम बताने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा, अभी सीटों के नाम उजागर नहीं किए जा सकते।

हार्दिक पंड्या ने पूरे दमखम से शुरू किया गेंदबाजी अभ्यास

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

वडोदरा/भाषा। भारत के अनुभवी हरफनमौला हार्दिक पंड्या ने अपने टखने की चोट से उबरने के बाद पूरी लय में गेंदबाजी करना शुरू कर दिया है, जिससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि वह इंडियन प्रीमियर लीग के आगामी सत्र के लिए तैयार हैं जहां वह मुंबई इंडियंस की कप्तानी करेंगे। पिछले साल टखने की चोट के कारण विश्व कप से बाहर होने वाले पंड्या को इंस्टाग्राम पर साझा किए गए वीडियो फुटेज में गेंदबाजी करते देखा गया।

हार्दिक पंड्या ने कहा, खेल में वापसी करके मुझे अच्छा लग रहा है। मेरी यात्रा 17 साल पहले इसी मैदान पर शुरू हुई थी।

हार्दिक को इस दौरान गेंदबाजी के अलावा मैदान में दौड़ लगाते और व्यायाम करते देखा गया उन्होंने कहा, मैं अभ्यास में जितना समय दे सकता हूं, हर दिन उतना दे रहा हूं।

हार्दिक को गुजरात टाइटंस से 'हाई-प्रोफाइल ट्रेड' के बाद 15 दिसंबर को बेहद सफल रोहित शर्मा की जगह मुंबई इंडियंस का कप्तान बनाया गया था। वह नवंबर में बांग्लादेश के खिलाफ विश्व कप मुकाबले के दौरान चोट लगने के बाद से राष्ट्रीय टीम से बाहर हैं।

वह इस महीने की शुरुआत में अफगानिस्तान के खिलाफ घरेलू टी 20 शृंखला में नहीं खेल पाए थे।

बिहार में राजद की बैठक, नेताओं ने फैसला लालू प्रसाद पर छोड़ा

पटना/भाषा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के महागठबंधन से किनारा करने की आशंका के बीच शनिवार को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेताओं ने यहां बैठक की और पार्टी अध्यक्ष लालू प्रसाद को ''कोई भी फैसला'' लेने के लिए अधिकृत किया। राजद के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सदस्य मनोज झा ने यहां प्रसाद की पत्नी राबड़ी देवी के आवास पर आयोजित पार्टी की बैठक के बाद इसकी घोषणा की।

झा ने कहा, कृपया और अधिक सवाल नहीं पूछे।

बैठक में राज्य विधानमंडल के सदस्यों समेत पार्टी के सभी वरिष्ठ नेता मौजूद थे। 79 विधायकों के साथ राजद विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी है। राजद महागठबंधन में सबसे बड़ा दल है। इसके अलावा कांग्रेस और तीन वामपंथी दल भी इसमें शामिल हैं।

अगर नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) महागठबंधन से किनारा कर लेती है तो महागठबंधन के पास विधानसभा में बहुमत के लिए आठ सदस्य कम रह जाएंगे।

भाजपा के साथ जाने से नीतीश कुमार की छवि खराब होगी : हरीश रावत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

देहरादून/भाषा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हरीश रावत ने शनिवार को कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री एवं जनता दल (यूनाइटेड) के प्रमुख नीतीश कुमार 'इंडिया' गठबंधन के सूत्रधार हैं और भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) में लौटने से उनकी छवि को नुकसान होगा। रावत ने यह भी कहा कि अगर कुमार को कोई शिकायत है तो उसका समाधान किया जाएगा। उन्होंने कहा, राजद और हम सभी, समाधान तलाशने के लिए तैयार हैं।

कुमार ने भाजपा से नाता तोड़ने के बाद अगस्त 2022 में राजद से हाथ मिला लिया था। इसके बाद, उन्होंने आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा का मुकाबला करने के लिए देश भर में सभी विपक्षी दलों को एक साथ लाने का अभियान शुरू किया, जिसकी परिणति 'इंडिया' गठबंधन के गठन के रूप में हुई। उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रावत ने कहा, अगर उनकी (कुमार की) कुछ शिकायतें हैं तो गठबंधन के भीतर दूर की जाएंगी। राजद और हम सभी, समाधान तलाशने के लिए तैयार हैं। उन्हें पाला बदलने की जरूरत नहीं है। इससे उनकी छवि खराब होगी।

किसी लक्ष्य का निर्धारण कर खुद पर दबाव नहीं बनने दे रहे हैं : म्हाम्ब्रे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हैदराबाद/भाषा। भारत के गेंदबाजी कोच पारस म्हाम्ब्रे पहले टेस्ट के तीसरे दिन शनिवार को इंग्लैंड के द्वारा दूसरी पारी में प्रभावी बढ़त लेने पर ज्यादा चिंतित नहीं होते हुए कहा कि स्पिनरों को यहां तेज घुमाव नहीं मिल रहा है।

भारतीय टीम ने पहली पारी में 190 रन की बड़ी बढ़त हासिल थी थी। इंग्लैंड ने ओली पोप की नाबाद शतकीय पारी के दम पर दूसरी पारी में छह विकेट पर 316 रन बना कर 126 रन की बढ़त हासिल कर ली।

मैच के आगे बढ़ने के साथ बल्लेबाजों के लिए परिस्थितियां थोड़ी मुश्किल होती जा रही है लेकिन म्हाम्ब्रे ने कहा कि वह किसी लक्ष्य का निर्धारण कर टीम पर दबाव नहीं बनाने देना चाहते है। उन्होंने कहा, हम किसी विशेष लक्ष्य का पीछा करने के बारे में नहीं सोच रहे हैं क्योंकि मैंने कहा था कि उद्देश्य कल सुबह जल्दी विकेट हासिल करना और उनके स्कोर को सीमित करना है।

म्हाम्ब्रे ने दिन के खेल के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा, हम कोई लक्ष्य निर्धारित करके खुद पर कोई दबाव नहीं डाल रहे हैं। हम सिर्फ विकेट से टर्न और उछाल हासिल करने के लिए सही क्षेत्रों में गेंदबाजी करना चाहते हैं।

म्हाम्ब्रे ने कहा कि पिच से स्पिनरों को टर्न (गेंद की घुमाव) मिल रही है लेकिन इसे निपटा जा सकता है क्योंकि गेंद तेजी से टर्न नहीं ले रही है।

उन्होंने कहा, अगर आप पिछले कुछ दिनों में पहले सत्र के खेल को देखे तो मुझे लगता है कि दूसरी पारी में बल्लेबाजी थोड़ी आसान है। मुझे लगता है कि यह थोड़ा बेहतर होने वाला है। उन्होंने कहा, पिच से गेंदबाजों को टर्न मिलेगा लेकिन वह वैसा टर्न नहीं है जैसा आम तौर पर आप भारतीय उपमहाद्वीप में देखते हैं। उपमहाद्वीप में जब खेल आगे बढ़ता है तो गेंद तेजी से घूमती है लेकिन यहां वैसा नहीं दिखा है। यह उतना चुनौतीपूर्ण नहीं है।

'इंडिया' गठबंधन नहीं बिखरेगा, इसे मजबूत बनाने के लिए हर कदम उठाने को तैयार : कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने बिहार के राजनीतिक घटनाक्रम की पृष्ठभूमि में शनिवार को कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस' (इंडिया) नहीं बिखरेगा तथा वह इसे मजबूत बनाने के लिए हर कदम उठाने को तैयार है।

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि नीतीश कुमार की 'इंडिया' गठबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान है तथा पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने उनसे बातचीत करने के प्रयास किए, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। बिहार को लेकर उनका कहना था कि गठबंधन में परिस्थिति बेहतर हो सकती है। रमेश ने यह भी कहा कि गठबंधन को मजबूत करने के लिए हर कदम उठाने को तैयार है। सीट बंटवारे पर विलंब से जुड़े सवाल पर रमेश ने कहा, यह कहना गलत है कि कांग्रेस की वजह से सीट बंटवारा नहीं हो सका। ऐसा नहीं है कि हमारी वजह से देरी हो रही है...राज्यों में हमारी बजबूत इकाइयां हैं....मुझे लगता है कि कुछ दिनों के भीतर हम सहमति बना लेंगे।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने यह भी कहा कि 'इंडिया' गठबंधन नहीं बिखरेगा। रमेश ने कहा कि ममता बनर्जी को 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' में शामिल होना चाहिए। उनका कहना था कि गांधी परिवार और कांग्रेस नेतृत्व ममता बनर्जी का बहुत सम्मान करते हैं।

नीतीश के भाजपा के साथ जाने की संभावना के बारे में पूछे जाने पर रमेश ने संवाददाताओं से कहा, बिहार में नए मंत्रिमंडल के गठन की बात हो रही है...भूपेश बघेल जी को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। मेरी जानकारी के मुताबिक बघेल जी आज रात ही पटना पहुंच जाएंगे।

कांग्रेस ने 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के लिए शुरू किया क्राउड फंडिंग अभियान

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के वास्ते धन जुटाने के लिए शनिवार को क्राउडफंडिंग अभियान शुरू किया, जिसे उसने 'डोनेट फॉर न्याय' नाम दिया है। इस अभियान के तहत चंदा देने वालों को राहुल गांधी द्वारा हस्ताक्षरित टी-शर्ट और यात्रा से संबंधित कुछ अन्य सामग्री मिलेगी। अजय माकन का कहना है कि यात्रा 67 दिनों तक चलेगी, ऐसे में कोई भी व्यक्ति न्यूनतम 67 रु. या फिर 670 रु., 6700 रुपए, 67000 रुपए या फिर 6.7 लाख रुपए तक योगदान दे सकता है। उन्होंने संवाददाताओं को बताया कि शनिवार को 'डोनेट फॉर न्याय अभियान' शुरू होने के बाद कुछ घंटे भीतर ही दो करोड़ रुपए की राशि एकत्र हो गई।

सुविचार

जैसा तुम सोचते हो, वैसे ही बन जाओगे। खुद को निर्बल मानोगे तो निर्बल और सबल मानोगे तो सबल ही बन जाओगे।

ट्वीट

आज जोधपुर में जिला प्रशासन, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, उधम प्रोत्साहन संस्थान एवं लघु उद्योग भारती जोधपुर द्वारा आयोजित 'पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव- 2024' में हिस्सा लिया। वहां लघु एवं कुटीर उद्योग एवं हस्तशिल्प कला से निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनियों का अवलोकन किया।

-दीया कुमारी

वीरता और आध्यात्म की धरती महाराष्ट्र की महान विभूतियों ने देश का गौरव बढ़ाया है। यहां हुए सामाजिक आंदोलनों ने देश को दिशा दी है। इस गौरवशाली धरा पर हो रहा 84वां अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन भी देश की विधायी संस्थाओं को और अधिक पारदर्शी, सशक्त और जवाबदेह बनाएगा।

-ओम बिरला

कहानी

प्रायश्चित

अमृतलाल नागर

जीवन वाटिका का वसंत, विचारों का अंधड़, भूलों का पर्वत, और ठोकरों का समूह है यौवन। इसी अवस्था में मनुष्य त्यागी, सदाचारी, देश-भक्त एवं समाज-भक्त भी बनते हैं, तथा अपने खून के जोश में वह काम कर दिखाते हैं, जिससे कि उनका नाम संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिख दिया जाता है, तथा इसी आयु में मनुष्य विलासी, लोलुपी और व्यभिचारी भी बन जाता है, और इस प्रकार अपने जीवन को दो कौड़ी का बनाकर पतन के खड्ड में गिर जाता है, अंत में पछताता है, प्रायश्चित करता है, परंतु प्रत्यंचा से निकाला हुआ बाण फिर वापस नहीं लौटता, खोई हुई सच्ची शांति फिर कहीं नहीं मिलती।

मणिधर सुंदर युवक था। उसके पर्स (जेब) में पैसा था और पास में था नवीन उमंगों से पूरित हृदय। वह भोला-भाला सुशील युवक था। बेचारा सीधे मार्ग पर जा रहा था, यारों ने भटका दिया - दीन को पथ-हीन कर दिया। उसे नित्य-प्रति कोठों की सैर कराई, नई-नई परियों की बाँकी झाँकी दिखाई। उसके उच्चविचारों का उसकी महत्वकाक्षांओं का अत्यंत निर्दयता के साथ गला घोंट डाला गया। बनावटी रूप के बाजार ने बेचारे मणिधर को भरमा दिया। पिता से पैसा माँगता था वह, अनाथालयों में चंदा देने के बहाने और उसे आँखें बंद कर बहाता था, गंदी नालियों में, पाप की सरिता में, घृणित वेश्यालयों में।

ऐसी निराली थी उसकी लीला। पंडित जी वृद्ध थे। अनेक कन्याओं के शिक्षक थे। वात्सल्य प्रेम के अवतार थे। किसी भी बालिका के घर खाली हाथ न जाते थे। मिठाई, फल, किताब, नोटबुक आदि कुछ न कुछ ले कर ही जाते थे तथा नित्यप्रति पाठ सुनकर प्रत्येक को पारितोषिक प्रदान करते थे। बालिकाएँ भी उनसे अत्यंत हिल-मिल गई थीं। उनके संरक्षकगण भी पंडित जी की वात्सल्यता देख गदगद हो जाते थे। घरवालों के बाद पंडित जी ही अपनी छात्राओं के निरीक्षक थे, संरक्षक थे। बालिकाएँ इनके घर जातीं, हारमोनियम बजाती, गाती, हँसती, खेलती, कूदती थीं। पंडितजी इससे गदगद हो जाते थे तथा बाहरवालों से प्रेमाश्रु ढरकाते हुआ कहा करते, ''इन्हीं लड़कियों के कारण मेरा बुढ़ापा कटता चला जा रहा है। अन्यथा अकेले तो इस संसार में मेरा एक दिवस भी काटना भारी पड़ जाता।'' समस्त संसार पंडितजी की एक मुँह से प्रशंसा करता था।

बाहरवालों को इस प्रकार ठाट दिखाकर पंडितजी दूसरे ही प्रकार का खेल खेला करते थे। वह अपनी नवयौवना सुंदर छात्राओं को अन्य विषयों के साथ-साथ प्रेम का पाठ भी पढ़ाया करते थे, परंतु वह प्रेम, विशुद्ध प्रेम नहीं, वरन प्रेम की आड़ में भोगलिप्सा की शिक्षा थी, सतीत्व विक्रय का पाठ था। काम-वासना का पाठ पढ़ाकर भोली-भाली बालिकाओं का जीवन नष्ट कराकर दलाली खाने की चाल थी, टट्टी की आड़ में शिकार खेला जाता था। पंडितजी के आस-पास युनिवर्सिटी तथा कालेज के छात्र इस प्रकार भिनभिनाया करते थे, जिस प्रकार कि गुड़ के आस पास मक्खियाँ। विचित्र थे पंडितजी और अद्भुत थी उनकी माया।

रायबहादुर डॉ. शंकरलाल अग्निहोत्री का स्थान समाज में बहुत ऊँचा था। सभा-सोसाइटी के हाकिम-हुक्काम में आदर की दृष्टि से देखे जाते थे वह। उनके थी एक कन्या - मुक्ता। वह हजारों में एक थी - सुंदरता और सुशीलता दोनों में। दुर्भाग्यवश वृद्ध पंडितजी उसे पढ़ाने के लिए नियुक्त किए गए। भोली-भाली बालिका अपने आदर्श को भूलने लगी। पंडित जी ने उसके निर्मल हृदय में अपने कुत्सित महामंत्र का बीजारोपण कर दिया था। अन्य युवती छात्राओं की भाँति मुक्ता भी पंडित जी के यहाँ 'हारमोनियम' सीखने जाने लगी।

पंडितजी मुक्ता के रूप लावण्य को किराए पर उठाने के लिए कोई मनचला पैसे वाला ढूँढ़ने लगे। अंत में मणिधर को आपने अपना पात्र चुन लिया। नई-नई कलियों की खोज में भटकने वाला मिलिंद इस अपूर्व कली का मदपान करने के लिए आकुलित हो उठा। इस अवसर पर पंडितजी की मुट्ठी गर्म हो गई। दूसरे ही दिवस मणिधर को पंडित जी के यहाँ जाना था। वह संध्या अत्यंत ही रमणीक थी। मणि ने उसे बड़ी प्रतीक्षा करने के पश्चात पाया था। आज वह अत्यंत प्रसन्न था। आज उसे पंडितजी के यहाँ जाना था। ...वह लंबे-लंबे पग रखता हुआ चला जा रहा था पंडितजी के पापालय की ओर। आज उसे रुपयों की वेदी पर वासना-देवी को प्रसन्न करने के लिए बलि चढ़ानी थी।

सब लोग मणिधर के ओजस्वी मुखमंडल को निहार रहे थे। मणिधर अब मुक्ता को संबोधित कर कहने लगा, ''मैंने भी पाप किया है। समाज द्वारा दंडित होने का वास्तविक अधिकारी मैं हूँ। मैं भी समाज एवं लक्ष्मी का परित्याग कर तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम्हें सर्वदा अपनी धर्मपत्नी मानता हुआ अपने इस घोर पाप का प्रायश्चित करूँगा। भद्रे, चलो अब इस अन्यायी एवं नीच समाज में एक क्षण भी रहना मुझे पसंद नहीं... चलो।'' मणिधर मुक्ता का कर पकड़कर एक ओर चल दिया, और जनता जादूगर के अचरज भरे तमाशे की नाई इस श्य को देखती रह गई।

मुक्ता पंडितजी के यहाँ बैठी हारमोनियम पर उँगलियाँ नचा रही थी, और पंडितजी उसे पुलकित नेत्रों से निहार रहे थे। वह बाजा बजाने में व्यस्त थी। साहसा मणिधर के आ जाने से हारमोनियम बंद हो गया। लजीली मुक्ता कुर्सी छोड़कर एक ओर खड़ी हो गई। पंडितजी ने कितना ही समझाया, ''बेटी! इनसे लज्जा न कर, यह तो अपने ही हैं। जा, बजा, बाजा बजा। अभ्यागत सज्जन के स्वागत में एक गीत गा।'' परंतु मुक्ता को अभी लज्जा ने न छोड़ा था। वह अपने स्थान पर अविचल खड़ी थी, उसके सुकोमल मनोहारी गाल लज्जावश 'अंगूरी' की भाँति लाल हो रहे थे, अलकें आ-आकर उसका एक मधुर चुंबन लेने की चेष्टा कर रही थीं। आतिथ्य सत्कार करना सिखलाया है कि घर पर कोई पाहुन आवे और घरवाला चुपचाप खड़ा रहे... शुभे, मेरे समीप बैठ जाइए।'' प्रेम की विद्युत कला दोनों के शरीर में प्रवेश कर चुकी थी। मुक्ता इस बार कुछ न बोली। वह मंत्र-मुग्ध-सी मणि के पीछे-पीछे चली आई तथा उससे कुछ हटकर पलंग पर बैठ गई। ''आपका शुभ नाम?'' मणि ने जरा मुक्ता के निकट आते हुए कहा। ''मुक्ता।'' लजीली मुक्ता ने धीमे स्वर में कहा।

बातों का प्रवाह बढ़ा, धीरे-धीरे समस्त हिचक जाती रही। और... और !! थोड़ी देर के पश्चात मुक्ता नीरस हो गई, उसकी आब उतर गई थी।

''हिजाबे नौं उरुमा रहबरे शौहर नबी मानद, अगर मानद शबे-मानद शबे दीगर नबीं मानद।''

हिचक खुल गई थी। मणि और मुक्ता का प्रेम क्रमशः बढ़ने लगा था। मणि मिलिंद था, पुष्प पर उसका प्रेम तभी ही ठहर सकता है, जब तक उसमें मद है, परंतु मुक्ता का प्रेम निर्मल और निष्कलंक था। वह पाप की सरिता को पवित्र प्रेम की गंगा समझकर बेरोक-टोक बहती ही चली जा रही थी। अचानक ठोकर लगी। उसके नेत्र खुल गए। एक दिन उसने तथा समस्त संसार ने देखा कि वह गर्भ से थी।

समाज में हलचल मच गई। शंकरलाल जी की नाक तो कट ही गई। वह किसी को मुँह दिखाने के योग्य न रह गए थे- ऐसा ही लोगों का विचार था। अस्तु। जाति-बिरादरी जुटी, पंच-सरपंच आए। पंचायत का कार्य आरंभ हुआ। मुक्ता के बयान लिए गए। उसने आँसुओं के बीच सिसकियों के साथ-साथ समाज के सामने संपूर्ण घटना आद्योपांत सुना डाली - पंडितजी का उसके भोले-भाले स्वच्छ हृदय में काम-वासना का बीजारोपण करना, तत्पश्चात उसका मणिधर से परिचय कराना आदि समस्त घटना उसने सुना डाली। पंडितजी ने गिड़गिड़ाते अपनी सफाई पेश की तथा मुक्ता से अपनी वृद्धावस्था पर तरस खाने की प्रार्थना की। परंतु मणिधर शांत भाव से बैठा रहा।

पंचों ने सलाह दी। बूढ़ों ने हाँ में हाँ मिला दिया। सरपंच महोदय ने अपना निर्णय सुना डाला। सारा दोष मुक्ता के माथे मढ़ा गया। वह जातिच्युत कर दी गई। रायबहादुर के पिता की भी वही राय थी, जो पंचों की थी। मणिधर और पंडितजी को सच्चरित्रता का सर्टिफिकेट दे निर्दोषी करार दे दिया गया। केवल 'अबला' मुक्ता ही दुख की धधकती हुई अग्नि में झुलसने के लिए छोड़ दी गई। अंत में अत्यंत कातर भाव से निस्सहाय मुक्ता ने सरपंच की दोहाई दी- उसके चरणों में गिर पड़ी। सरपंच घबराए। हाय, भ्रष्टा ने उन्हें स्पर्श कर लिया था। क्रोधित हो उन्होंने उस गर्भिणी, निस्सहाय, आश्रय-हीना युवती को धक्के मार कर निकाल देने की अनुमति दे दी। उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए हिंदू समाज को वास्तव में पतन के खड्ड में गिराने वाले, नरराक्षस, खुशामदी टट्टू 'पीर बवर्ची, भिस्ती, खर' की कहावत को चरितार्थ करने वाले इस कलंक के सच्चे अपराधी पंडितजी तत्क्षण उठे, उसे धक्का मारकर निकालने ही वाले थे - अचानक आवाज आई - ठहरो। अन्याय की सीमा भी परिमित होती है। तुम लोगों ने उसका भी उल्लंघन कर डाला है।'' लोगों ने नेत्र घुमाकर देखा, तो मणिधर उत्तेजित हो निश्चल भाव से खड़ा कह रहा था, ''हिंदू समाज अंधा है, अत्याचारी है एवं उसके सर्वेसर्वा अर्थात हमारे 'माननीय' पंचगण अनपढ़ हैं, गँवार हैं, और मूर्ख हैं। जिन्हें खरे एवं खोटे, सत्य और असत्य की परख नहीं वह क्या तो न्याय कर सकते हैं और क्या जाति-उपकार? इसका वास्तविक अपराधी तो मैं हूँ। इसका दंड तो मुझे भोगना चाहिए। इस सुशील बाला का सतीत्व तो मैंने नष्ट किया है और मुझसे भी अधिक नीच है यह बगुला भगत बना हुआ नीच पंडित। इस दुराचारी ने अपने स्वार्थ के लिए न मालूम कितनी बालाओं का जीवन नष्ट कराया है - उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया है। जिस आदरणीय दृष्टि से इस नीच को समाज में देखा जाता है वास्तव में यह नीच उसके योग्य नहीं, वरन यह नर पशु है, लोलुपी है, लंपट है। सिंह की खाल ओढ़े हुए तुच्छ गीदड़ है - रँगा सियार है।''

सब लोग मणिधर के ओजस्वी मुखमंडल को निहार रहे थे। मणिधर अब मुक्ता को संबोधित कर कहने लगा, ''मैंने भी पाप किया है। समाज द्वारा दंडित होने का वास्तविक अधिकारी मैं हूँ। मैं भी समाज एवं लक्ष्मी का परित्याग कर तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम्हें सर्वदा अपनी धर्मपत्नी मानता हुआ अपने इस घोर पाप का प्रायश्चित करूँगा। भद्रे, चलो अब इस अन्यायी एवं नीच समाज में एक क्षण भी रहना मुझे पसंद नहीं... चलो।'' मणिधर मुक्ता का कर पकड़कर एक ओर चल दिया, और जनता जादूगर के अचरज भरे तमाशे की नाई इस दृश्य को देखती रह गई।

- 'हिन्दीसमय' से आभार

संजय उवाच

■ संजय भारद्वाज
9890122603
writersanjay@gmail.com

देह से हूँ

समय के प्रवाह के साथ एक प्रश्न मनुष्य के लिए यक्षप्रश्न बन चुका है। यह प्रश्न पूछता है कि जीवन कैसे जिएँ? इस प्रश्न का अपना-अपना उत्तर पाने का प्रयास हरेक ने किया। जीवन सापेक्ष है, अत: किसी भी उत्तर को पूरी तरह खारिज़ नहीं किया जा सकता। तथापि एक सत्य यह भी है कि अधिकांश उत्तर भौतिकता तजने या उससे बचने का आह्वान करते दीख पड़ते हैं।

मंथन और विवेचन यहीं से आरंभ होते हैं। स्मार्टफोन या कम्प्युटर के प्रोसेसर में बहुत सारे इनबिल्ट प्रोग्राम्स होते हैं। यह इनबिल्ट उस सिस्टम का प्राण है। विकृति, प्रकृति और संस्कृति मनुष्य में इसी तरह इनबिल्ट होती हैं। जीवन इनबिल्ट से दूर भागने के लिए नहीं, इनबिल्ट का उपयोग कर सार्थक जीने के लिए है।

मनुष्य पंचेंद्रियों का दास है। इस कथन का दूसरा आयाम है कि मनुष्य पंचेंद्रियों का स्वामी है। मनुष्य पंचतत्व से उपजा है, मनुष्य पंचेंद्रियों के माध्यम से जीवनरस ग्रहण करता है। भ्रमर और रसपान की शृंखला टूटेगी तो जगत का चक्र परिवर्तित हो जाएगा, संभव है कि खंडित हो जाए। कर्म से, श्रम से पलायन किसी प्रश्न का उत्तर नहीं होता। गृहस्थ आश्रम भी उत्तर पाने का एक तपोपथ है। साधु (संन्यासी के अर्थ में) होना अपवाद है, असाधु रहना परंपरा। सब साधु होने लगे तो असाधु होना अपवाद हो जाएगा। तब अपवाद पूजा जाने लगेगा, जीवन उसके इर्द-गिर्द अपना स्थान बनाने लगेगा।

एक कथा सुनाता हूँ। नगरवासियों ने तय किया कि सभी वेश्याओं को नगर से निकाल बाहर किया जाए। निर्णय पर अमल हुआ। वरांगनाओं को जंगल में स्थित एक खंडहर में छोड़ दिया गया। कुछ वर्ष बाद नगर खंडहर हो गया जबकि खंडहर के इर्द-गिर्द नया नगर बस गया।

समाज किसी वर्गविशेष से नहीं बनता। हर वर्ग घटक है समाज का। हर वर्ग अनिवार्य है समाज के लिए। हर वर्ग के बीच संतुलन भी अनिवार्य है समाज के विकास के लिए। इसी भाँति संसार में देह धारण की है तो हर तरह की भौतिकता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, सब अंतर्भूत हैं। परिवार और अपने भविष्य के लिए भौतिक साधन जुटाना कर्म है और अनिवार्य कर्तव्य भी।

जुटाने के साथ देने की वृत्ति भी विकसित हो जाए तो भौतिकता भी परमार्थ का कारण और कारक बन सकती है। मनुष्य अपने 'स्व' के दायरे में मनुष्यता को ले आए तो स्वार्थ विस्तार पाकर परमार्थ हो जाता है।

इस तरह का कर्मनिष्ठ परमार्थ, जीवनरस को ग्रहण करता है। जगत के चक्र को हृष्ट-पुष्ट करता है। सृष्टि से सृष्टि को ग्रहण करता है, सृष्टि को सृष्टि ही लौटाता है। सांसारिक प्रपंचों का पारमार्थिक कर्तव्यनिर्वहन उसे प्रश्न के सबसे सटीक उत्तर के निकट ले आता है।

प्रपंच में परमार्थ, असार में सार, संसार में भवसार देख पाना उत्कर्ष है। देह इसका साधन है किंतु देह साध्य नहीं है। गर्भवती के लिए कहा जाता है कि वह उम्मीद से है। मनुष्य को अपने आप से निरंतर कहना चाहिए, 'देह से हूँ पर देह मात्र नहीं हूँ।' विदेह तो कोई बिरला ही हो सकेगा पर स्वयं को देह मात्र मानने को नकार देना, अस्तित्व के बोध का शंखनाद है। इस शंखनाद के कर्ता, कर्म और क्रिया तुम स्वयं हो।

बोध कथा

नौकरी

शेखचिल्ली की एक अमीर आदमी के यहां नौकरी लग गई। उस सेठ ने उसे अपने ऊंट चराने का काम सौंपा। शेखचिल्ली हर रोज ऊंटों को चराने के लिए जंगल ले जाता और शाम को उन्हें चरा कर वापस घर ले आता। एक दिन जब शेखचिल्ली ऊंटों को चराने के लिए जंगल गया, तो वो उन्हें चरता छोड़ खुद पेड़ के नीचे सो गया। इस बीच कोई ऊंटों को रस्सी पकड़ कर ले गया। जब शेखचिल्ली जागा और ऊंटों को वहां से गायब पाया, तो वो घबरा गया। शेखचिल्ली ने वहीं प्रतिज्ञा ली कि वह सेठ के घर अब तब जाएगा, जब वो सारे ऊंटों को ढूंढ कर वापस ले आएगा। ऊंटों की तलाश में शेखचिल्ली जंगल में इधर-उधर घूमने लगा। उसे ऊंटों के नाम तक याद नहीं थे। इतने में उसे सेठ के गांव के कुछ लोग सामने से आते हुए दिखाई दिए। शेखचिल्ली ने उन्हें ऊंटों की लीद दिखाते हुए कहा कि जिनके हम नौकर हैं, उनसे कह देना कि जिनकी यह लीद है वे जाते रहे।

शेखचिल्ली मूर्ख था और ये बात तो सब जानते हैं कि मुर्खों को गुस्सा बहुत जल्दी आता है। एक दिन की बात है जब शेखचिल्ली रास्ते में जा रहा था तो लड़कों ने उसे तंग करना शुरू कर दिया। एक लड़का कहता महामूर्ख तो दूसरे लड़के कहते जिंदाबाद। लड़के ये कहने के बाद घरों में छिप जाते और शेखचिल्ली अपना गुस्सा पी कर रह जाता।

एक दिन की बात है शेखचिल्ली के हाथ एक छोटा सा बच्चा चढ़ गया। फिर क्या था, गुस्साए शेखचिल्ली ने लड़के को कुएं में फेंक दिया और घर आकर अपनी बीवी को ये बात बता दी। शेखचिल्ली की बीवी ने रात को शेखचिल्ली के सोने के बाद जाकर उस छोटे लड़के को कुएं से बाहर निकाला। बाहर सर्दी बहुत थी और पानी में रहने से लड़के का बुरा हाल था। शेखचिल्ली की बीवी उस लड़के को अपने भाई के पास ले गई और सारा बात बताई। शेखचिल्ली के साले ने अपनी बहन से कहा कि आपकी बात तो ठीक है, लेकिन जब इस बच्चे के मां-बाप इसे ढूंढते हुए आएंगे तो फिर क्या करेंगे? शेखचिल्ली की बीवी ने कहा कि देखो भाई अगर हम इस बच्चे को ऐसी हालत में इसके मां-बाप को सौंपेंगे तो बिना मतलब का हंगामा होगा और बात और बढ़ जाएगी। इसलिए बच्चे को थोड़ा आराम मिलने तक इसे तुम अपने पास रखो। अगर इसके मां-बाप इसे ढूंढते हुए आएंगे तो उनको मैं समझा लूंगी।

इसके बाद शेखचिल्ली की बीवी अपने घर वापस आ गई और एक बकरी के बच्चे को कुएं में फेंक आई, जिस कुएं में शेखचिल्ली ने उस छोटे बच्चे को फेंका था। अगले दिन सुबह के समय जब उस छोटे लड़के के माता-पिता उसकी खोज में शेखचिल्ली के घर की तरफ आए तो उस वक्त शेखचिल्ली अपने घर की गली में टहल रहा था। छोटे बच्चे के पिता ने शेखचिल्ली से पूछा कि क्या उसने उनके बेटे को देखा है?

छोटे बच्चे के माता-पिता भागते हुए उस कुएं के पास पहुंचे और गांव के एक आदमी को जल्दी से कुएं में उतारा। उस आदमी ने कुएं के अंदर से आवाज दी कि जनाब यहां कोई लड़का-वड़का तो है नहीं, हां एक बकरी का बच्चा जरूर है। यह कहकर उसने बकरी के बच्चे को रस्सी से बांधकर ऊपर भेजा। बच्चा वहां न मिलने पर उसके माता-पिता बहुत परेशान हो गए और शहर के दूसरे हिस्सों में उसकी तलाश करने लगे। इस बीच बच्चा जब थोड़ा ठीक हुआ तो शेखचिल्ली के साले ने उसे उसके घर छोड़ दिया। यह सब होने के कई हफ्तों तक बेचारा शेखचिल्ली इस बात को लेकर परेशान रहा कि उसने फेंका तो कुएं में इंसानी बच्चे को ही था, फिर वो बकरी का बच्चा कैसे बन गया।

इस बात को हुए काफी अरसा बीत गया और शेखचिल्ली को एक और अमीर आदमी के यहां नौकरी मिल गई। शेखचिल्ली वहां देखभाल का काम किया करता था। एक दिन जब वो और उसका मालिक गाड़ी पर सवार होकर बाजार जा रहे थे तो शेखचिल्ली मालिक के साथ गाड़ी में पीछे बैठा हुआ था। गाड़ी चलते वक्त तेज हवा से शेखचिल्ली के मालिक का रेशमी रुमाल हवा में गिर गया। मालिक को रुमाल गिरते वक्त उसका पता नहीं चला, लेकिन शेखचिल्ली ने यह देख लिया।

वीर गाथा

मेजर भूपेंद्र सिंह: खुद की जान बचाने के लिए नहीं किया कोई समझौता

मेजर भूपेंद्र सिंह का जन्म 25 अक्टूबर, 1952 को राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के मोहनपुरा में हुआ था। एक तो राजस्थान की धरती, वहीं सरहदी इलाका होने के कारण भूपेंद्र ने सैन्य जीवन को करीब से देखा था। इससे उन्हें सेना में भर्ती होने की प्रेरणा मिली।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने सेना भर्ती का इम्तिहान दिया और उसमें कामयाब हो गए।

उन्हें प्रशिक्षण के लिए आईएमए, देहरादून भेजा गया। वहां उनका प्रदर्शन शानदार रहा। उन्हें प्रतिष्ठित सॉर्ड ऑफ ऑनर भी मिला। इसके बाद उन्हें इंजीनियर्स कोर में शामिल कर लिया गया।

भूपेंद्र सिंह ने अरुणाचल प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब समेत कई इलाकों में सेवाएं दीं। उन्हें साल 1994 में जम्मू-कश्मीर में तैनात किया गया, जहां सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं पर काम किया जा रहा था। इसके तहत कुछ पुलों का निर्माण भी होना था, जिसके लिए मेजर भूपेंद्र निरीक्षण करने गए थे।

इसी दौरान अक्कर गांव में आतंकवादियों ने घात लगाकर हमला किया। इसके जवाब में जवानों ने भी गोलीबारी की। भूपेंद्र ने साथी जवानों का बहुत बहादुरी से नेतृत्व किया। उनकी जवाबी कार्रवाई से भयभीत होकर आतंकवादी भाग गए।

उसी साल 17 जनवरी को हिज्बुल मुजाहिदीन के आतंकवादियों ने मेजर भूपेंद्र का अपहरण कर लिया। उन्होंने रिहाई के बदले कुछ मांगें कीं, जिन्हें भूपेंद्र ने खारिज कर दिया, क्योंकि उससे देश की सुरक्षा को गंभीर खतरा पैदा हो सकता था। उन्होंने भूपेंद्र को बहुत डिगाने की कोशिश की, लेकिन वे अपने संकल्प पर अडिग रहे। इससे बौखलाए आतंकवादियों ने उनकी हत्या कर दी।

मेजर भूपेंद्र जानते थे कि अगर उन्होंने आतंकवादियों की मांगें नहीं मानीं, तो ज़िंदगी संकट में पड़ सकती है, लेकिन भारत माता के वीर सपूत ने कोई समझौता नहीं किया। उनकी वीरता, प्रतिबद्धता और बलिदान को देश हमेशा याद रखेगा। मेजर भूपेंद्र सिंह को 'शौर्य चक्र' से सम्मानित किया गया।

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law. **Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टैंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।- **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

कृष्ण लीला के प्रति मेरे समर्पण का सम्मान है पद्मश्री पुरस्कार : स्वैन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भुवनेश्वर/बरहमपुर। इस साल पद्म श्री पुरस्कार के लिए चुने गए सबसे उम्रदराज व्यक्ति 105 वर्षीय गोपीनाथ स्वैन ने कहा है कि यह प्रतिष्ठित पुरस्कार 'कृष्ण लीला' के प्रति उनके करीब नौ दशक के समर्पण का सम्मान है। स्वैन को जब उनके परिवार के सदस्यों ने बताया कि उन्हें पद्म श्री पुरस्कार के लिए चुना गया है, उस समय वह 'कृष्ण लीला' गा रहे थे। इस वर्ष ओडिशा के चार व्यक्तियों को पद्म श्री पुरस्कार के लिए चुना गया है। ओडिशा के स्वैन के अलावा भागवत प्रधान, बिनोद महराना और बिनोद कुमार पसायत का नाम पुरस्कार पाने वालों की सूची में है। 'कृष्ण लीला' स्थानीय संगीत और गायन के माध्यम से भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करने की कला है।अपने इलाके में 'गुरु' के नाम से जाने जाने वाले स्वैन ने कहा कि इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुने जाने से वह अभिभूत हैं। स्वैन ने कहा, यह कृष्ण लीला के अभ्यास के प्रति मेरे करीब नौ दशक के समर्पण का सम्मान है। उम्र मुझे ज्ञान हासिल करने से नहीं रोक सकेगी। मैं अपनी आखिरी सांस तक सीखना जारी रखूंगा। जिला परिषद सदस्य निवेदिता प्रधान ने कहा, हम बहुत खुश हैं और हमें उन पर गर्व भी है कि उन्हें इस उम्र में इतना प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलेगा। वर्ष 1918 में जन्मे स्वैन ने 10 साल की उम्र में अपने पिता के बड़े भाई से कृष्ण लीला सीखना शुरू किया। वह शुरुआत में शास्त्रीय गीत गाते थे और कृष्ण की भूमिका निभाते थे। बाद में वह इस लोक कला के मुख्य गायक-सह-निर्देशक बन गए।

उन्होंने अपने गांव में एक अखाड़ा (पारंपरिक नृत्य विद्यालय) की स्थापना की थी और कई ग्रामीण युवाओं को गीत एवं नृत्य का प्रशिक्षण देना शुरू किया। संबलपुर शहर के गीतकार और नाटककार बिनोद कुमार पसायत ने उन्हें इस पुरस्कार के लिए चुने जाने पर केंद्र सरकार को धन्यवाद दिया। पसायत ने कहा, जब मैंने यह खबर सुनी तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। मेरी बहू ने बाद में इस खबर की पुष्टि की। मोदी की सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद। पसायत ने कहा कि उनका छोटा सैलून उनकी प्रयोगशाला है जहां उन्होंने शब्दों के साथ प्रयोग किया और साहित्यिक रचनाएं कीं।

भारत रंग महोत्सव

नई दिल्ली में शनिवार को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) के निदेशक चितरंजन त्रिपाठी और अन्य लोग 'भारत रंग महोत्सव 2024 के 25वें वर्ष' पर एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान।

डीपफेक का शिकार हुईं टेलर स्विफ्ट

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

न्यूयॉर्क। मशहूर गायिका टेलर स्विफ्ट डीपफेक का शिकार हुईं हैं , उनकी कई आपत्तिजनक तस्वीरें सोशल मीडिया पर सार्जनिक हुई हैं। इस मामले ने कृत्रिम मेधा (एआई) के बढ़ते दुरुपयोग के बारे में चिंता बढ़ा दी है। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर इस सप्ताह गायिका स्विफ्ट की आपत्तिजनक फर्जी तस्वीरें सामने आईं। एआई का इस्तेमाल करते हुए किसी तस्वीर पर या वीडियो पर किसी अन्य व्यक्ति की तस्वीर लगाकर उसे इस तरह पेश करना कि वह असली लगे डीपफेक कहलाता है। इन तस्वीरों के सार्वजनिक होने के बाद स्विफ्ट के प्रशंसक एकजुट हुये और उन्होंने गायिका के समर्थन में 'एक्स' पर अभियान चलाया। कुछ ने कहा कि उन्होंने उन सोशल मीडिया खातों की शिकायत की है जो आपत्तिजनक तस्वीरें साझा कर रहे हैं।

डीपफेक का पता लगाने वाले समूह 'रिएलिटी डिफेंडर' ने कहा कि उसे स्विफ्ट को चित्रित करने वाली कुछ अश्लील सामग्री विशेष रूप से 'एक्स' पर मिली हैं। कुछ तस्वीरें फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया मंचों पर भी पाई गई हैं। 'रिएलिटी डिफेंडर' के विकास प्रमुख मैसन एलन ने कहा,कुछ तस्वीरें हटाई गई लेकिन उस वक्त तक ये लाखों उपयोगकर्ताओं तक पहुंच गईं थीं। स्विफ्ट की फर्जी तस्वीरों के बारे में पूछने के लिए जब 'एक्स' से संपर्क किया गया तो उसने 'एसोसिएटेड प्रेस' से कहा कि कंपनी अपने प्लेटफॉर्म पर बिना सहमति के आपत्तिजनक तस्वीरों को साझा करने से सख्ती से रोकती है।

'एक्स' ने कहा, हमारी टीम सभी तस्वीरों को हटाने का काम कर रही है साथ ही उन खातों पर कार्रवाई कर रही है जिनसे से तस्वीरें पोस्ट की गई थीं। इस बीच मेटा ने एक बयान में कहा कि वह विभिन्न इंटरनेट सेवाओं पर दिखाई देने वाली सामग्री की कड़ी निंदा करता है और इसे हटाने के लिए काम किया गया है। स्विफ्ट से इस संबंध में बातचीत की कोशिश की गई लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका।

इजराइल मामले में आईसीजे के फैसले ने हमें सही साबित किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने कहा है कि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) ने गाजा में इजराइल के सैन्य आक्रमण के दौरान नरसंहार किए जाने के आरोप लगाने के उनके देश के फैसले को सही साबित किया है। संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत ने गाजा में युद्धविराम का तत्काल आदेश देने से शुक्रवार को इनकार कर दिया, लेकिन इजराइल से जानमाल के नुकसान को रोकने के लिए प्रयास करने को कहा।

मामला दाखिल करने वाले दक्षिण अफ्रीका ने अदालत से इजराइल को अपना सैन्य अभियान रोकने का आदेश देने का आग्रह किया था। शीर्ष अदालत ने कहा कि वह उस मामले को खारिज नहीं करेगी जिसमें इजराइल पर गाजा में नरसंहार का आरोप लगाया गया है। इसके बाद रामफोसा ने शुक्रवार को राष्ट्रीय टीवी चैनल पर कहा कि आईसीजे ने शुक्रवार को जो फैसला सुनाया, वह अंतरराष्ट्रीय कानून, मानवाधिकार और सबसे बड़ी बात, न्याय की जीत है।

उन्होंने कहा, अदालत ने कहा है कि (1948 नरसंहार) संधि के अनुच्छेद नौ के अनुसार, उसे हमारी याचिका पर फैसला करने का अधिकार है।

कुछ लोग अपने ही गठबंधन में न्याय नहीं कर पा रहे : अनुराग ठाकुर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने विपक्षी गठबंधन 'इंडिया'पर तंज कसते हुए शनिवार को कहा कि कुछ लोग अपने ही गठबंधन में न्याय नहीं कर पा रहे हैं। लखनऊ में 19वें एशियाई एवं चौथे पैरा तथा राष्ट्रीय खेलों के पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेने आए अनुराग ठाकुर ने संवाददाताओं से कहा, कुछ लोग अपने गठबंधन में भी न्याय नहीं कर पाये और इसके कारण एक के बाद एक राज्यों में क्या हो रहा है, आप देख सकते हैं। ठाकुर की यह टिप्पणी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेताओं द्वारा आपस में और सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श करने के एक दिन बाद आई है, जिसमें संकेत मिले हैं कि पार्टी बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ एक बार फिर हाथ मिलाने को तैयार है, क्योंकि 'इंडिया' गठबंधन के साझेदारों के साथ उनके संबंध कमजोर हो रहे हैं।

युवा मामले और खेल विभाग भी संभाल रहे ठाकुर ने यह भी कहा, 500 वर्षों का इंतजार खत्म हुआ। भव्य राम मंदिर का निर्माण पूरा हो गया है और प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जिस तरह पूरे देश में मौहाल रहा उससे तो ये (भक्तों की) लंबी कतारें लगी ही थीं, क्योंकि इंतजार 500 साल का था। श्रद्धालुओं के उत्साह को देखते हुए ठाकुर ने अपील की, देशवासियों से मेरा अनुरोध है कि वे अपना कार्यक्रम उप्र सरकार और राम मंदिर द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार बनाएं।

भाजपा ने शुक्रवार को भी कांग्रेस पर निशाना साधते हुए दावा किया था कि ममता बनर्जी सरकार ने सबसे पुरानी पार्टी को अपमानित करने के लिए पश्चिम बंगाल में राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को अनुमति देने से इनकार करने का फैसला किया है। यह भी बताया गया कि कांग्रेस को यात्रा के तहत राज्य में कुछ जनसभा की अनुमति लेने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। भाजपा की पश्चिम बंगाल इकाई के सह-प्रभारी और आईटी विभाग के प्रमुख अमित मालवीय ने कहा, राहुल गांधी की यात्रा को अनुमति नहीं देने का ममता बनर्जी का फैसला 'इंडिया' गठबंधन के ताबूत में आखिरी कील की तरह है।

हुब्बल्ली मंडल का प्रदर्शन यात्री परिवहन और माल ढुलाई के लिए रहा उत्साहजनक

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हुब्बल्ली। दक्षिण पश्चिम रेलवे (दपरे) के हुब्बली मंडल ने 26 जनवरी को रेलवे इंस्टीट्यूट साउथ ग्राउंड में 75वां गणतंत्र दिवस मनाया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक हर्ष खरे ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। हर्ष खरे ने अपने संबोधन में कहा कि जारी वित्तीय वर्ष 2023-24 के पहले नौ महीनों के दौरान हुब्बल्ली मंडल का प्रदर्शन यात्री और माल ढुलाई, दोनों के लिए उत्साहजनक रहा है। वित्त वर्ष में दिसंबर 2023 के आखिर तक यात्रियों की संख्या 2.15 करोड़ रही, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह 1.95 करोड़ थी, जिसमें 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

दिसंबर 2023 तक मूल यात्री आय 400 करोड़ रुपए रही है। वित्तीय वर्ष में दिसंबर 2023 तक पहले नौ महीनों में हासिल की गई कुल सकल कमाई 3,200 करोड़ रुपए है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 8 प्रतिशत अधिक है। आरपीएफ ने 76 लावारिस बच्चों को बचाया और उन्हें उनके माता-पिता से मिलाने के लिए चाइल्ड हेल्प डेस्क/एनजीओ को सौंपा। उन्होंने कहा कि आरपीएफ ने यात्रियों के बैग, मोबाइल फोन, लैपटॉप, नकदी और सोने के आभूषण समेत 48 लाख रुपए का छूटा हुआ सामान बरामद कर उनके मालिकों को सौंप दिया गया। भारत सरकार की अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत मंडल बहुत बड़े पैमाने पर स्टेशन विकास कार्य कर रहा है।

इस योजना के तहत हुब्बली मंडल के 18 स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। हुब्बली मंडल के विभिन्न खंडों पर बुनियादी ढांचे और लाइन क्षमता में सुधार पर विशेष जोर दिया जा रहा है। जारी वित्तीय वर्ष के दौरान 43.6 किलोमीटर का दोहरीकरण का कार्य पूरा किया जा चुका है। कैलेंडर वर्ष 2023 के दौरान 249.56 आरकेएम विद्युतीकरण पूरा किया गया है।

इस अवसर पर डॉग स्क्वायड शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। रेलवे कर्मचारियों के मेधावी बच्चों को छात्रवृत्ति और ड्राइंग व निबंध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। रेलवे के 25 कर्मचारियों को उनके अनुकरणीय कार्य के लिए डीआरएम सुरक्षा पुरस्कार दिए गए। समारोह में अतिरिक्त मंडल रेल प्रबंधक संतोष कुमार वर्मा एवं संजय कुमार सिंह, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी के आसिफ हफीज, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त/आरपीएफ आलोक कुमार, दपरे महिला कल्याण संगठन मंडल की अध्यक्ष रुचि खरे, अन्य अधिकारी, यूनियन सदस्य एवं कर्मचारी मौजूद थे।

साउथ इंडस्ट्री में काम करने को लेकर काफी नर्वस हूं : बॉबी देओल

मुंबई/एजेन्सी

एक्टर बॉबी देओल, जिन्होंने 'एनिमल' में अबरार के रूप में सुर्खियां बटोरीं, साउथ इंडस्ट्री में कदम रखने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, जिसके लिए वह खुश भी हैं और नर्वस भी। बॉबी तमिल भाषा की फिल्म 'कांगुवा' और कृष जगरलामुडी द्वारा निर्देशित तेलुगु फिल्म 'हरि हर वीरा मल्लू' और कई अन्य फिल्मों में नजर आएंगे। क्या वह अपना दायरा बढ़ाने की कोशिश कर रहे है? इस सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने आईएएनएस से कहा, 'देखिए, मैं बस खुद को

चुनौती देना चाहता हूं। मैं साउथ की भाषा नहीं जानता, इसलिए फिल्म का हिस्सा बनने से मैं बहुत नर्वस हूं... मैं सचमुच बहुत खुश हूं कि मैं 'कांगुवा' कर रहा हूं। निर्देशक शिवा एक अद्भुत व्यक्ति हैं। मुझे उनके साथ काम करने में बहुत मजा आ रहा है।'

अभिनेता ने कहा, मैं कृष के साथ एक तेलुगु फिल्म में काम कर रहा हूं, वह एक शानदार निर्देशक भी हैं,, वह 'हरि हर वीरा मल्लू' में पवन कल्याण के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करते नजर आएंगे। 'कांगुवा' के को-स्टार सूर्या के बारे में बात करते हुए बॉबी ने एक्टर की प्रशंसा की। बॉबी ने कहा, सूर्या एक अद्भुत अभिनेता और वास्तव में एक अच्छे इंसान हैं... ऐसे लोगों के साथ काम करना वाकई अच्छा लगता है।

फिल्म 'कंगुवा' से बॉबी देओल का लुक रिलीज

मुंबई/वार्ता। बॉलीवुड अभिनेता बॉबी देओल के जन्मदिन के अवसर पर उनकी आने वाली फिल्म कंगुवा से उनका लुक रिलीज हो गया है। बॉबी देओल फिल्म 'कंगुवा' में अभिनेता सूर्या के साथ नजर आयेंगे।बॉबी देओल के जन्मदिन के अवसर पर मेकर्स ने सोशल मीडिया पर फिल्म कंगुवा से बॉबी का पहला लुक जारी किया है। यूवी क्रिएशंस ने बॉबी का पहला लुक शेयर करते हुए लिखा, निर्दयी. ताकतवर, अविस्मरणीय। हैप्पी बर्थडे सर। फिल्म कंगुवा में बॉबी देओल उदरिन की भूमिका में दिखाई देंगे। सोशल मीडिया पर लोग उनके इस खतरनाक लुक को काफी पसंद कर रहे हैं।

रामायण में विभीषण के किरदार में नजर आ सकते हैं विजय सेतुपति

मुंबई/एजेन्सी

बीते साल निर्देशक नितेश तिवारी ने 'रामायण' फिल्म बनाने की घोषणा की थी। इसी के साथ ये भी बताया था कि रणबीर कपूर 'राम' का रोल अदा करेंगे। अब खबर आ रही है कि रणबीर कपूर की 'रामायण' में साउथ के सुपरस्टार विजय सेतुपति भी नजर आ सकते हैं। विजय सेतुपति को विभीषण का किरदार निभाने के लिए एप्रोच किया गया है। हालांकि, इस पर नितेश या उनकी टीम की ओर से अब तक कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। विजय बनेंगे 'विभीषण'

रिपोर्ट के मुताबिक, रणबीर कपूर 'राम', साई पल्लवी 'सीता', यश 'रावण' और निर्देशक नितेश ने विभीषण के रोल के लिए विजय सेतुपति को अप्रोच किया है। अगर सब कुछ प्लान के मुताबिक चलता है तो जल्द ही निर्देशक अपनी फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे।

विभीषण यानी रावण का भाई, यश और विजय साथ में स्क्रीन शेयर करते नजर आ सकते हैं। सूत्र के हवाले से पता लगा है कि नितेश कुछ दिनों पहले ही विजय से इस रोल के सिलसिले में मिले थे। अपने साथ वो स्क्रिप्ट भी लेकर गए थे। विजय को जब नितेश ने पूरी कहानी नैरेट की तो उन्हें वो काफी पसंद भी आई। दोनों के बीच अभी बातचीत चल रही है, क्योंकि फीस को लेकर बात अटक गई है।

रिपोर्ट्स की मानें तो नितेश तिवारी की 'रामायण' काफी बड़े पैमाने पर बनने वाली है। सनी देओल का नाम फिल्म में 'हनुमान' के किरदार के लिए सामने आ रहा है। वहीं, लारा दत्ता को 'कैकेई' के रोल के लिए अप्रोच किया गया है। बॉबी देओल के पास भी नितेश गए थे, 'कुंभकरण' का रोल लेकर, लेकिन एक्टर ने इस रोल को करने से इनकार कर दिया। 'रामायण' को नितेश तिवारी और नमित मल्होत्रा मिलकर प्रोड्यूस करने वाले हैं। मेकर्स प्लान कर रहे हैं कि ये फिल्म आने वाले साल 2025 दिवाली पर रिलीज की जाए। फिल्म का प्री-प्रोडक्शन शुरू हो चुका है और अगर रिपोर्ट्स की मानें तो कास्ट फाइनलाइज होने ही वाली है। हालांकि, पूरी स्टार कास्ट को लेकर मेकर्स की ओर से अब तक कोई घोषणा नहीं हुई है।

फिल्म 'शैतान' का टीजर रिलीज

मुंबई/वार्ता

बॉलीवुड अभिनेता अजय देवगन की आने वाली फिल्म शैतान का टीजर रिलीज हो गया है। फिल्म शैतान ने अजय देवगन के आर माधवन और ज्योतिका की अहम भूमिका है। शैतान के टीजर की शुरुआत होती है एक राक्षस की मूर्ति के साथ, जिसमें पीछे वॉइस ओवर चलता है, जिसमें शैतान कहता है, 'कहते हैं ये पूरी दुनिया बहरी है, लेकिन सुनती सिर्फ मेरी है।

काले से भी काला मैं, बहकाने का प्याला मैं, तंत्र से लेकर श्लोक का..मालिक हूं मैं नौ लोक का। अजय देवगन ने सोशल मीडिया पर फिल्म शैतान टीजर शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, वो पूछेगा तुमसे...एक खेल खेलोगे? पर उसके बहकावे में मत आना। जियो स्टूडियोज, देवगन फिल्म्स और पैनोरमा स्टूडियोज द्वारा प्रस्तुत, शैतान का निर्माण अजय देवगन, ज्योति देशपांडे, कुमार मंगत पाठक और अभिषेक पाठक द्वारा किया गया है।विकास बहल निर्देशित फिल्म शैतान 08 मार्च को रिलीज होगी।

कंगना रनौत ने फिल्म इमरजेंसी में शिमला समझौता को किया रिक्रेयेट

मुंबई/वार्ता

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत ने अपनी आने वाली फिल्म इमरजेंसी में दिवंगत भारतीय प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो के शिमला समझौते को रिक्रिएट किया है। ज़ी स्टूडियोज़ और मणिकर्णिका फिल्म्स द्वारा निर्मित पीरियड पॉलिटिकल ड्रामा फिल्म इमरजेंसी में कंगना रनौत ने पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभायी है।भारत की प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो द्वारा 02 जुलाई 1972 को शिमला, भारत में हस्ताक्षर किए गए थे। इस समझौते से 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध का औपचारिक अंत हो गया। इसका उद्देश्य शांति स्थापित करना, भारत को सेना वापस बुलाने की आवश्यकता, कश्मीर मुद्दे का समाधान करना और बेहतर संबंधों को बढ़ावा देना था।

कंगना रनौत द्वारा लिखित और निर्देशित, 'इमरजेंसी' में अनुपम खेर, महिमा चौधरी, मिलिंद सोमन, श्रेयस तलपड़े, विशाक नायर और दिवंगत सतीश कौशिक भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। ज़ी स्टूडियोज और मणिकर्णिका फिल्म्स द्वारा निर्मित, फिल्म का संगीत संचित बल्हारा और पटकथा और संवाद रितेश शाह द्वारा दिया गया है। 'इमरजेंसी' 14 जून, 2024 को स्क्रीन पर आने वाली है।

हिना खान ने शेयर की नो-फिल्टर सेल्फी

मुंबई/एजेन्सी

एक्ट्रेस हिना खान ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर नो-फिल्टर सेल्फी शेयर की, जिसमें उनकी आंखों के नीचे रेड रैशेज और होठों पर छाले दिखाई दे रहे हैं। हिना 'ये रिश्ता क्या कहलाता है', 'नागिन 5', 'कसौटी जिंदगी की', 'डेमेज्ड 2' और 'बिग बॉस 11' सहित अन्य के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने 28 दिसंबर 2023 को अस्पताल में भर्ती होने की सूचना दी थी। उन्होंने बताया था कि उन्हें तेज बुखार है। अस्पताल से छुट्टी मिलने के कुछ दिनों बाद हिना सऊदी अरब के मक्का की उमराह पर गईं। शनिवार को, उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक नो-फ़िल्टर सेल्फी शेयर की, जिसमें उन्होंने वाइट टी शर्ट पहनी हुई है और अपने बालों को खुला रखा है। तस्वीर के कैप्शन में उन्होंने लिखा,नो-फिल्टर सेल्फी... मेरी आंखों के नीचे रेड रैशेज, होठों पर छाले, जुकाम सब बुखार की वजह से। वर्कफ्रंट की बात करें तो, उन्हें आखिरी बार 'फियर फैक्टर: खतरों के खिलाड़ी 13' में एक चैलेंजर के रूप में देखा गया था।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com

चेन्नई | रविवार | 28-01-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY

RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

जिस प्रकार फूलों में सर्वश्रेष्ठ गुलाब होता है वैसे ही गुरुओं में भी सर्वश्रेष्ठ है गुरु राजेन्द्रसूरीश्वरजी। गुरु का उपकार जिस पर हो जाता है उसका कल्याण हो जाता है। गुरु हमेशा पुण्य से व पुण्यशाली को मिलते हैं और जिसको भी मिलते है उसका जीवन सफल हो जाता है। राजेन्द्र सूरी ने जिनशान के लिए अनेक कार्य किए तथा उन्हें अनेक पदवियों से नवाजा गया परन्तु उन्होंने कभी की पद व पदवी को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। राजेन्द्र सूरी एवं सरल व तपस्वी संत थे।

चेन्नई बंदरगाह प्राधिकरण ने मनाया गणतंत्र दिवस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां चेन्नई पोर्ट अथॉरिटी में 26 जनवरी को बाबू जगजीवन राम स्टेडियम, चेन्नई पोर्ट टोंडियारपेट हाउसिंग कॉलोनी, टोंडियारपेट में 75वां गणतंत्र दिवस मनाया गया।

अथॉरिटी के अध्यक्ष सुनील पालीवाल, आईएएस ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण किया और सभा को संबोधित किया। संबोधन के दौरान, चेयरपर्सन ने चेन्नई पोर्ट की उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी दी, जिसमें पोर्ट कर्मचारियों और उनके परिवार और पोर्ट समुदाय के लिए उठाए गए विभिन्न कल्याणकारी उपायों पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने समग्र रूप से तमिलनाडु राज्य में बंदरगाह और भीतरी इलाकों की प्रगति के लिए बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा की गई पहल के बारे में भी जानकारी दी।

चेयरपर्सन ने अपने संबोधन में इस बात पर प्रकाश डाला कि चेन्नई पोर्ट ने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद, पिछले वर्ष की तुलना में दिसंबर 2023 तक 5.77 की वृद्धि के साथ उच्च कार्गो हैंडलिंग हासिल की है। चेन्नई पोर्ट ने दिसंबर 2023 तक 154 करोड़ रुपये का शुद्ध अधिशेष हासिल किया है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 94 करोड़ रुपये अधिक है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि चेन्नई पोर्ट अथॉरिटी ने 17 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2023 तक मुंबई में ग्लोबल मैरीटाइम इंडिया समिट (जीएमआईएस) में भाग लिया, जिसका उद्देश्य विभिन्न निवेश अवसरों पर सहयोग करने और इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए समुद्री हितधारकों को एक साथ लाना था। आगे। इस आयोजन में भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कंपनियों, नीति निर्माताओं, निवेशकों और अन्य हितधारकों के बीच बातचीत और सहयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए एक निवेशक शिखर सम्मेलन और एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी शामिल थी।

चेन्नई पोर्ट ने 24 जनवरी को पूर्वी समुद्री गलियारे के संचालन पर एक भारत रूस कार्यशाला का भी आयोजन किया है। कार्यशाला का उद्घाटन माननीय केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग और आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने किया। उन्होंने आधुनिकीकरण, कनेक्टिविटी बढ़ाने, बंदरगाह के नेतृत्व वाले औद्योगीकरण, नवाचार और अनुसंधान में राष्ट्रों के साथ साझेदारी के माध्यम से भारतीय समुद्री क्षेत्र को आगे बढ़ाने के भारत सरकार के दृष्टिकोण को रेखांकित किया। रूसी संघ के सुदूर पूर्व और आर्कटिक के विकास के लिए माननीय उप मंत्री श्री अनातोली यूरीविच बोबराकोव ने चेन्नई में भारत-रूस कार्यशाला के नतीजे पर अपना विश्वास व्यक्त किया।

सभी कार्यक्रम एकजुटता की भावना से आयोजित किए गए, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक प्रदर्शन, राष्ट्रीय गौरव की भावना के साथ हमारी विरासत का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में एस. विश्वनाथन, आईएएस, उपाध्यक्ष; एस. मुरली कृष्णन, आईडीएएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी; चेन्नई पोर्ट अथॉरिटी बोर्ड के सदस्य, विभागों के प्रमुख, ट्रेड यूनियन नेता, चेन्नई पोर्ट अथॉरिटी के पोर्ट अधिकारी और कर्मचारी और शिक्षक और छात्र चेन्नई पोर्ट स्कूल ने उत्सव में भाग लिया।

ऊटी पहुंची सतिवृंद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयम्बटूर। श्री वर्धमान जैन सेवा संघ(कोयंबटूर)के एक प्रतिनिधिमंडल ने ऊटी में विराजित श्रमण संघीय गुरुनिसा श्री मंगल ज्योतिजी. म.सा., श्री विकास ज्योतिजी म.सा., श्री ऋजु प्रज्ञाजी म.सा., श्री नैतिकश्री जी. म.सा. व श्री मौलिक श्री जी. म.सा के दर्शन वंदन एवं मांगलिक श्रवण हेतु पहुंचा। सेवा संघ के संस्थापक राजेश कुमार गादिया के साथ ही कार्यकारिणी सदस्य प्रसन कटारिया, हेमंत भंसाली, गुमानमल संकलेचा, वगतावर मल श्रीश्रीमाल ने सतीवृंद के दर्शन लाभ प्राप्त किया।धर्म चर्चा करते हुए कोयंबटूर के टीम सदस्यों ने सुख साता पृछा की।

ज्ञातव्य हो की सतीमंडल का 2023 का चातुर्मास मैसूरु में संपन्न हुआ था। सतिमंडल गुंडलपेट, तेप्पकाडू व मसिनगुडी होते हुए ऊटी पहुंचे हैं। प्राप्त जानकारी अनुसार सतिमंडल रविवार को ऊटी से विहार कर कुन्नूर की ओर विहार करेंगे।

अरसीकेरे तीर्थ में पौष पूनम में उमड़े श्रद्धालु

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हासन। दक्षिण नाकोडा तीर्थ श्री संकट मोचन पार्श्व भैरव धाम अरसीकेरे में पौष पूनम मेला का आयोजन किया। इस मेले में अनेक श्रद्धालु उपस्थित हुए। मेले में सादडी हाल इरोड निवासी सुकनीबाई मोहनलाल करबावाला परिवार ने सम्पूर्ण लाभ लिया। इस मौके पर ईरोड़ से संघ का आयोजन किया गया। तीर्थ परिसर में बैंड बाजे के साथ संघ का प्रवेश हुआ। सुबह भक्ताम्बर, पार्श्व एवं गुरु इक्तीसा, भैरव चालीसा से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में पार्श्व भैरव महापूजन के बाद गायक दिलखुश बाफणा के साथ तनसुख, रिंकु बाफणा, प्रकाश राठौड, प्रेमलता, कलिंगा कवाड एवं स्थानीय हेमा कोठारी के सुमधुर कंठ से भक्ति की गंगा बहाई। बेंगलूरु से राष्ट्रीय पार्श्व भैरव भक्त परिवार के तत्वावधान में आयोजित राजेश कुमार बंधामुथा परिवार द्वारा कायमी लाभार्थी बनकर रेल यात्रा संघ का आयोजन किया। भैरवजी को छप्पन भोग, 108श्रीफल, पुष्प अर्पिण एवं तेल चढ़ाने के लाभार्थियों का ट्रस्ट द्वारा सम्मान किया गया। इस मौके पर मांगीलाल मेहता, डॉ विजय कुमार सुराना, विनोद मुणोत, रमेश कटारिया, श्रीपाल गांधी, महावीर पीपाडा सहित अनेक भक्त उपस्थित रहे। ट्रस्ट अध्यक्ष अशोक कुमार सुराना ने लाभार्थी परिवार का सम्मान किया।

गीता श्लोक पाठ और फ़ैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन चेन्नई अपने विभिन्न कार्यक्रमों से सनातन धर्म को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर काम कर रहा है। इसी क्रम में तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन चेन्नई ने द्वारकादास गोवर्धन दास वैष्णव कॉलेज के सभागार में शनिवार को चेन्नई शहर के स्कूली छात्र/छात्राओं के लिए गीता श्लोक पाठ एवं महाभारत के पात्रों पर आधारित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस अवसर पर इस प्रतियोगिता को दो भागों में बांटा गया। इस प्रतियोगिता में कुल 25 स्कूल के लगभग 80 छात्रों ने हिस्सा लिया।

तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गोयल ने सभी का स्वागत किया तथा गीता के 18 अध्यायों की चर्चा की। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष बृज खंडेलवाल ने गीता प्रेस के बारे में बताते हुए अपने विचार रखे। उन्होने कहा कि आने वाली पीढ़ी को धर्म से जोड़ना ही हमारा उद्देश्य है। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डॉ एस पी सुरेश प्रो चेन्नई मैथमेटिकल इंस्टीट्यूट ने भी गीता के महत्व और श्री कृष्ण के उपदेश पर अपने विचार रखे। विशिष्ट अतिथि के रूप में आई श्रीमती प्रेमा कृष्णमूर्ति ने भी नई पीढ़ी में ऊर्जा का संचार किया और सभी से गीता और रामायण को पढ़ने की अपील की।

पी मारुति ने संयुक्त संयोजक के रूप में कार्यक्रम को संचालित किया। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार मूँधड़ा एवं वर्तमान उपाध्यक्ष अशोक केडिया एवं अशोक लाखोटिया भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष मोहन बजाज, राम औतार रुंगटा, अजय नाहर और कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ मनोज कुमार सिंह भी उपस्थित रहे इस कार्यक्रम का उद्देश्य यही था की अधिक से अधिक छात्रों में भगवत गीता के प्रति जागरूकता पैदा की जाए। तमिलनाडु मारवाड़ी सम्मेलन चेन्नई के महासचिव मुरारीलाल सोंथालिया ने सभी आगंतुकों, अतिथियों और प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

सालासर बालाजी मंदिर का हुआ शिलान्यास

मंदिर निर्माण कार्य हुआ शुरु

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। यहां बनेरघट्टा रोड स्थित रांका कॉलोनी में सालासर बालाजी सेवा समिति के तत्वावधान में गणतंत्र दिवस पर शुक्रवार को मंदिर निर्माण के लिए भूखंड पर पांच दिवसीय अनुष्ठान के साथ सलारपुरिया बिल्डर्स के निर्देशक बिजय कुमार अग्रवाल के हाथों से भूमि पूजन अनुष्ठान सम्पन्न हुए।

इस मौके पर सालासार सेवा समिति के मंदिर ट्रस्ट के मनित सोमानी, संजय शाह, विक्रम अग्रवाल, प्रमोद मुरारका, सतीश मित्तल, सुरेन्द्र गोयल, रतन कन्दोई, महेश गोयल सहित बड़ी संख्या में सदस्यगण व भक्तगण उपस्थित रहे। भूमि पूजन के अवसर पर उपस्थित भक्तों ने जय जय सियाराम के जयघोष के साथ मंदिर निर्माण का कार्य शुरू हुआ। तत्पश्चात मेहंदीपुर बालाजी मंदिर के पुजारी रामलाल बोथरा टीम द्वारा संगीतमय सुंदरकांड पाठ किया गया। पूरे दिन मंदिर भूखण्ड पर भक्तों ने अखण्ड ज्योत के दर्शन किये। इस शुभ अवसर पर विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

संतों की जयंती एवं पुण्यस्मृति मनाई गई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। साहूकारपेट में आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की जयंती व श्रमण सूर्य दिव्य विभूतिश्री मिश्रीमलजी म.सा. की पुण्यतिथि श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्वावधान में साहुकारपेट के स्वाध्याय भवन में हुआ। अध्यक्ष प्रेमकुमार कवाड द्वारा स्वागत व गुरुदेव के स्मरण पश्चात समारोह का संचालन करते हुए श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष आर नरेन्द्र कांकरिया ने बाल हस्ती के बाल्यकाल जीवन की मुख्य घटनाओं, आचार्य हस्ती के श्रमण संघ में अविस्मरणीय योगदान मोहविजेता रुप के अनेक संस्मरणों संग जिनशासन में महत्वपूर्ण भूमिका,सभी परम्पराओं के आचार्यों सन्त रत्नों के संग मधुर संबंधों का विस्तार पूर्वक उल्लेख करते हुए श्रमण संघ के प्रथम आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा द्वारा आचार्य हस्ती को णमो पुरिसवरगंधहत्थीणँ विशेषण से संबोधित करने की विशेषता के विषय का चित्रण किया।

कार्याध्यक्ष ने श्री मिश्रीमलजी म.सा के जीवन चरित्र का पूर्ण उल्लेख करते हुए दिव्य विभूति को सफल साहित्यकार सन्त रत्न के रुप में बताया और दया धर्म और परमार्थ सूं हालत सुधारी देश री, जैन धर्म रो साचो रे जोगी बाबो मरुधर केसरी की भावमय स्तुति करते हुए गुणगाण किये।

स्वाध्यायी श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक स्वाध्याय की महत्वता पर आचार्य भगवन्त की मौलिक विशेषताओं का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए उनके चरित्रमय जीवन के अनेक संस्मरण धर्म सभा में रखते हुए कहा कि तिथियों को मनाने की सार्थकता आचरण में हैं। वरिष्ठ स्वाध्यायी चम्पालाल बोथरा ने तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवायें। श्रावक संघ के मन्त्री अनोपचंद बागमार ने महापुरुषों की जयजयकार की।

महापुरुषों के पावन दिवस के उपलक्ष्य पर श्रावक संघ के सहयोगी संगठन जैन रत्न युवक परिषद तमिलनाडु ने गवर्नमेंट हॉस्पिटल के बाहर विशाल अन्नदानम का कार्यक्रम रखा जिसमे युवक परिषद के सदस्यों ने सराहनीय सेवाएं दी।

'एक शाम श्री सुंधा माता के नाम' भजन संध्या आज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। सुंधा माता भक्त मंडल के तत्वाधान में एकदिवसीय भजन संध्या एक शाम सुंधा माता के नाम का आयोजन साहूकार पेट के तुलसीगम स्ट्रीट स्थित राजेश्वर भवन में किया जा रहा है सायं 4 बजे से यह सुंधा माता भक्त मंडल की 18वीं भव्य जागरण है जिसमें राजथान बालोतरा की माधुरी वैष्णव एंड पार्टी राजस्थान अजीत के नरसी सिंह अपने भजनों की प्रस्तुति देंगे। मंच संचालन डार्विन शर्मा करेंगे। कार्यक्रम के दौरान राम लक्ष्मण जानकी एव हनुमान की

झांकी विशेष आकर्षण का केन्द्र होगी। मुख्य अतिथि के रूप में रेल बोर्ड के पीएससी सदस्य रविचन्द्रन और चेन्नई सेंट्रल भाजपा जिला सचिव पवन कुमार होंगे। यह पूरी जानकारी मंडल के अध्यक्ष किशन राज गजाणी ने दी।

संयम स्वीकार महोत्सव हेतु संतों का हासन प्रवेश

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

हासन। यहां आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ में आचार्यश्री महेन्द्रसागरसूरीजी म. सा. ने शनिवार को अपने प्रवचन में कहा कि जब-जब अपने आप के लिए जीओगे तब तक अपने भगवान और धर्म का मजाक बनाते रहेंगे। जिस दिन मनुष्य अपने धर्म और भगवान के लिए जीना सीख लेता है उस दिन भगवान के लिए बुरा भला बोलने वालों को वह जबाव देने लग जाता है। भगवान तो सम्पूर्ण जीव राशि का कल्याण चाहने वाले होते हैं। धर्म व्यक्ति को दुर्गति की ओर ले जाने से रोकता है उसे सद्गति का मार्ग प्रशस्त करता है। आचार्यश्री महेन्द्रसागरजी, मुनिश्री मेरुपद्मसागरजी एवं मुनि अर्हम् पद्मसागरजी का मुमुक्षु तनुष कुमार जितेन्द्र कुमार सोफाड़िया के संयम स्वीकार महोत्सव हेतु यहां प्रवेश हुआ। संघ द्वारा संतों का भावभीना स्वागत भव्य सामैया से किया गया। मंदिर में गुरुवर्यों के साथ प्रभु के दर्शनकर, आदिश्वर जैन भवन में आयोजित प्रवचन में बालिका मंडल, महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संघ की ओर से देवराज वसंतराम महावीर एवं नरेन्द्र ने अपने विचार व्यक्त किए।

आरआरनगर श्रावक समाज ने चातुर्मास हेतु आचार्यश्री से निवेदन किया

बेंगलूरु। आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शनार्थ राजा राजेश्वरीनगर, सभा अध्यक्ष छत्र सेठिया अपनी टीम के साथ आचार्यश्री के दर्शन कर आगामी चातुर्मास प्रदान कराने हेतु निवेदन किया तथा लिखित रूप में निवेदनार्थ एक पत्र भी श्रीचरणों में प्रस्तुत किया। निवेदन में आर आर नगर में लगभग 300 तेरापंथी परिवार प्रवासित है। संस्थापक अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने निवेदन कर कहा कि यह क्षेत्र सबसे युवा क्षेत्र है तथा युवा वर्ग के लिए सही मार्ग दर्शक साधु-संतों का सान्निध्य ही हो सकता है। चातुर्मास न मिलने से आज के भौतिक युग में भटकाव की संभावना अधिक है अतः गुरुदेव श्रावक-श्राविका की चातुर्मासिक प्यास तो आपके आशीर्वाद से ही तृप्त हो सकती है। वहाँ विराजित साध्वी प्रमुखाश्री, मुख्य मुनिश्री, साध्वीजी आदि के अलावा अन्य विराजित साधु-संतों के दर्शनों का लाभ एवं रास्ते की पैदल सेवा का लाभ भी लिया।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Aditya at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.